श्रीमैथिली विवाह
पदावली
संग्रहकर्ता
स्व. श्री मैथिलीशरणाचार्य वेदान्ती
संशोधित मूल्य : 30 रुपये

श्रीमते रामानन्दाचार्याय नमः

श्रीमैथिली विवाह पदावली

सम्पादक

स्वामी मैथिलीशरणाचार्य 'वेदान्ती'

प्राप्त स्वर्णपदक

।। श्रीमते रामानन्दाचार्याय नमः ।।

।। श्री युगलप्रियाशरणाय नमः ।।

श्री मैथिली विवाह पदावली

सम्पादक:

रामप्रियाशरण

एम.ए. ''वेदान्ताचार्य''

महन्थ श्रीरसिक शिरोमणि मन्दिर

चिरान्द छपरा, जिला सारण बिहार

महन्थ श्री सद्‌गुरु निवास गोलाघाट, अयोध्याजी

प्रकाशक/ अधिकारी:

श्री रसिक शिरोमणि मन्दिर

चिरान्द छपरा सारण बिहार

संशोधित एवं परिवर्द्धित:

षष्टम संस्करण, श्रीजानकी नवमी, सन् 2010 ई0

न्यौछावर: 35/– रूपये मात्र

मुद्रक मनीराम प्रिंटिंग प्रेस, अयोध्या मो 9935220964, 8957464994

प्रथम संस्करण की

भूमिका

सिय रघुवीर विवाह, जे सप्रेम गावहिं सुनहिं।
तिन्ह कहँ सदा उछाह, मंगलायतन राम जस।।

कलि पावनावतार गोस्वामी श्रीतुलसीदासजी ने श्रीसीताराम विवाह महोत्सव को परम मंगलमय कहा है। जो भक्त श्रीसीताराम विवाह महोत्सव का गान करते हैं उनके पास सदा मंगल होते रहते हैं। श्रीसीतारामजी की अनन्त लीलाओं में विवाह लीला परम मधुर एवं रसमय है। भारतीय संस्कृति का मूर्त्तरूप श्रीसीताराम विवाह में परिस्फुटित हुआ है। लीलावैचित्री रसवैचित्री से चमत्कृत श्रीसीताराम विवाह रस का अपार सागर है। अनन्त सौन्दर्य माधुर्य निलया श्रीमिथिलेशराजनन्दिनी एवं अपरिगणित कन्दर्पदर्प दलन पटीयान् सौन्दर्य माधुर्य सुधासिन्धु श्रीराघवेन्द्र के असमोर्ध्व माधुर्य का पूर्ण विकास विवाह महोत्सव के अवसर पर दुलहा -दुलहिन के रूप में हुआ है। जिसने दुलहा दुलहिन के रूप में श्रीसीतारामजी का दर्शन नहीं किया, उसका जीवन व्यर्थ है। श्री गोस्वामीजी ने लिखा है-

"दूलह राम सीय दुलही री"

ब्याह विभूषन बसन विभूषित,
सखि अवली लखि ठगि सी रही री।
जीवन जनम लाहु लोचन फल,
है इतनोई लह्यो आजु सही री।।

श्रीगोस्वामीजी ने कवितावली में लक्ष्मी, नारायण, गौरी, शंकर, लोमश भुशुण्डि, नारद, हनुमान आदि को साक्षी

देकर कहा है -

बानी बिधि गौरी हर सेसहु गनेस कहीं,
सही भरी लोमस भुसुण्डि बहु बारिखो।
चारि दस भुअन निहारि नर नारि सब,
नारद को परदा न नारद सों पारिखो।
तिन कही जग में जगमगति जोरी एक,
दूजो को कहैया और सुनैया चष चारिखो।
रमा रमा रमन सुजान हनुमान कही,
सीय सी न तीय न पुरुष राम सारिखो।।

विवाह महोत्सव के अपार साहित्य उपलब्ध है। सिद्ध सन्तों के अनेकों पद उपलब्ध है। मिथिला के रसिक भक्तों के अनेकों पद विवाह के सम्बन्ध में गाये जाते हैं, जिनमें श्रीमोदलताजी के पदों का माधुर्य सबसे अधिक है। श्रीअवध के आचार्यों के पद अत्यन्त सरस है, जो कुछ प्रकाशित थे कुछ अप्रकाशित। श्रीसीतारामजी की कृपा से आवश्यक पदों का संग्रह इस पुस्तक में कर दिया गया है। इन पदों का संग्रह श्रीमैथिलीशरण जी ने अत्यन्त परिश्रम से किया है। अतः ये धन्यवाद के पात्र हैं। विवाह रस के रसिक भक्तों को इन पदों द्वारा दुलहा दुलहिन चित-चोर की अनुपम छवि का दर्शन प्राप्त होगा।

अनन्द श्री विभूषित
स्वामी श्रीयुगलानन्यशरण जी
महाराज की जयन्ती
कार्तिक शुक्ल सप्तसी, २०४१

स्वामी श्रीसीतारामशरण

जेहे बरदान सखी ओही फुलबरिया गौरी से मँगली,
ओहे भेटल सजनमाँ सुरति श्यामली।।
सहज लजीली सुकुमारी श्रीकिशोरीजी बिहँसि बजली,
अहीं लीय फुलवरिया में भेली पगली।।
सियाजी के सरस बचन सुनि सखियाँ सकुचि रहली,
भेली उथल-पुथल सुनि 'सनेह' अली।।

पद -१५६

मिथिला के भाग आजु बैठे जनक के अंगनमां।
काहू के भगवान बैठे काहू केर ध्यान बैठे,
मेरे तो मेहमान आजु बैठे।।
शंकर के ध्यान बैठे भक्त के भगवान बैठे,
मेरे तो मेहमान आजु बैठे।।
तपसी के त्याग बैठे, भक्त के अनुराग बैठे,
सियाजू के सुहाग आजु बैठे।।
दुलहा मनभावन आये सिया संग व्याह रचाये,
आजु सुफल बनि बैठे।।
नवल नवल बैठे सिया हिय कमल बैठे,
प्रेम प्रतिपाल आजु बैठे।।

पद -१५७

दुलरुवा के हम आँखि बसैवै।।
आँखि के आँसू लक हार गुथैवै, अपना दुलरुवाके गरे पहिरैवे।
बोइ अमर फल अमर फल पैवे, अमर पहुनमां के अमर बनैवै।।

सिया अरु पिया बिच गाँठि जोड़ैवै, अपन पहुनां प्रेम जाल फँसैवै।
जेहि आँखि देखल ई चारो जोड़ी, सेही आँखि अब कोना दुनियां लखैवै।।

पद -१५८

दुलहा के रंग आसमानी लली के रंग बादामी।
काले काले जुल्फे ओ लट घुंघुराले, चितवनि अमिय रस सानी,
लखत भई दीवानी।।
अरुणाधर मुख पान के लाली, मंद मंद मुसुकानी,
नजर नहिं ठहरानी।।
प्रेम प्रमोद के बरसत बादल सखि प्रेम रस में रंगानी,
अधिक हिय हुलसानी।।
लचकत कटि चलि आवे कोहवर में,चाल चले मस्तानी,
विवस भई मिथिलानी।।

पद -१५६

सिया के सजन मोरा बड़ रे दुलरुवा रखबैन हिय में लगाय गे माई।।
एको पलक लय संग न छाड़ब लखितहिं रहब सदाय गे माई।।
फूलक हार जौं हम बनि जइतौं प्रीतम गर-लिपटाय गे माई।।
केशक लट बनि जुगल कपोलनि रस चखितहुँ हरषाय गे माई।।
पीताम्बर जौं हम बनि जइतौं प्रीतम अंग लिपटाय गे माई।।
धन'रसकान्तिलता' यहि जीवन लीतथि गर लिपटाय गे माई।।

कोहवर की झाँकी

स्याम सरीर सुभायँ सुहावन। सोभा कोटि मनोज लजावन।।
जावक जुत पद कमल सुहाए। मुनि जन मधुप रहत जिन्ह छाए।।

पीत पुनीत मनोहर धोती। हरति बाल रवि दामिनी जोती॥
कल किंकिनि कटिसूत्र मनोहर। बाहु बिसाल बिभूषन सुन्दर॥
पीत जनेउ महा छवि देई। कर मुद्रिका चोरि चितु लेई॥
सोहत व्याह साज सब साजे। उर आयत उरभूषण राजे॥
पियर उपरना काखा सोती। दुहुँ आँचरन्हि लगे मनि मोती॥
नयन कमल कल कुंडल काना। वदन सकल सौदर्ज निधाना॥
सुंदर भृकुटि मनोहर नासा। भाल तिलक रूचिरता निवासा॥
सोहत मौर मनोहर माथे। मंगलमय मुकुता मनि गाथे॥

छन्द

गाथे महामनि मौर मंजुल अंग सब चित चोरहीं।
पुरनारि सुर सुंदरी बरहिं बिलोकि सब तिन तोरहीं॥
मनि वसन भूषन वारि आरति करहिं मंगल गावहीं।
सुर सुमन बरिसहिं सूत मागध बंदि सुजस सुनावहीं॥
कोहवरहिं आने कुँअर कुँअरि सुआसिनिन्ह सुख पाइकै।
अति प्रीति लौकिक रीति लागी करन मंगल गाइ कै॥
हलकौरि गौरि सिखाव रामहिं सीय सन सारद कहैं।
रनिवास हास विलास रस बस जन्म को फल सब लहैं॥
निज पानि मनि महुँ देखि अति मूरति सुरुप निधान की।
चालति न भुजबल्ली विलोकनि विरह भय बस जानकी॥
कौतुक विनोद प्रमोद प्रेम न जाइ कहि जानहिं अली।
वर कुँअरि सुंदर सकल सखी लवाइ जनवासेहिं चली॥

तेहि समय सुनिअ असीस जहँ तहँ नगर नभ आनंद महा।
चिरजिअहुँ जोरी चारु चार्‌यो मुदित मन सबहीं कहा।।
जोगीन्द्र सिद्ध मुनीस देव बिलोकि प्रभु दुन्दुभि हनी।
चले हरषि बरषि प्रसून निज निज लोक जय जय जय भनी।।

दो०- सहित बधूटिन्ह कुँअर सब तब आये पितु पास।
सोभा मंगल मोद भरि उमगेउ जनु जनवास।।

कोहवर से जनवासा प्रस्थान पद -१६०

क्या चला आता है मेरा बांका बनरा बादशाह।
जिस तरह बादल बहारें बरसने वाला बादशाह।।
पैरों दस्त देखिये मेंहदी से लाले लाल है।
सारी पोशाकें सुरुख रूमाल वाला बादशाह ।।
शौक से सुरमा दिये फूलों का गजरा है गले।।
अश्वताजी रासवारी सेहरे वाला बादशाह।।
शाह शाही जुल्फ है खुबसुर्ती से शोखी लिये।
उमराव शाही शाहजादा है फैजाबाद वाला बादशाह।।
चश्म मिशले चूँ गुलाबी रात का जागा हुआ।
इस बनरे के ऊपर बारूँ दीन दुनियाँ बादशाह।।
गुप्त गूँ करते हुए सारे जहाँ का दर्द दिल।
इत उत नजर डाले हुए श्रीअवध वाला बादशाह।।
चलो सखि सखे श्याम से मिलना हमें तो जरूर है।
श्यामसखे सब दस्तरां शमशीर वाला बादशाह।।

जेवनार के लिए प्रस्थान पद -१६१

आगू आगू लक्ष्मीनिधि घोड़वा नचावे हे दुलहा चलि आवे,
घोड़वा नचावे दुलहा चार।।
घोड़वा के चाल देखि लाजेला गरुड़वा हे दु.,
मोरवा लजाय लखि शृंगार।।
माथे मणि मौरिया तर उठले बदरवा हे दु.,
कारी कारी जुलुफ घुंघुरार।।
कोमल कपोलवा पर लटकै अलकनियां हे दु.,
चमके चन्दनमां लिलार।।
भृकुटी धनुषवा शर जुलुमी नयनमां हे दु.,
प्रेमी जन नयना के शिकार।।
निरखे 'सनेह' ठाढ़ि महल दुअरिया हे दु.,
बन्दीजन गावें जस हजार।।

पद -१६२

झमड़ैत बाटे मिथिलेश के भवनमां हाय रे जियरा,
दुलहा के रूप अनमोल।।
कारी कारी जुलुफी के ऊपर से मउरिया हाय.,
झूलत बा कुण्डल कपोल।।
सांवर सांवर गोरे गोरे उमर बा बरोबर हाय.,
केहू नइखे लागत मझोल।।
करत बा मन जे अकेले बतियैती हाय.,
कहत 'भिखारी' परदा खोल।।

जेवनार-चौपाई

पुनि जेवनार भई बहु भाँती। पठए जनक बोलाइ बराती।।
परत पावड़े बसन अनूपा। सुतन्ह समेत गवन कियो भूपा।।
सादर सबके पाय पखारे। जथा जोग पीढ़न्ह बैठारे।।
धोए जनक अवधपति चरना। सील सनेह जाइ नहिं बरना।।
बहुरि राम पद पंकज धोए। जे हर हृदय कमल महँ गोए।।
तीनिउ भाइ राम सम जानी। धोए चरन जनक निज पानी।।
आसन उचित सबहिं नृप दीन्हें। बोलि सूपकारी सब लीन्हें।।
सादर लगे परन पनवारे। कनक कील मनि पान सँवारे।।

सूपोदन सुरभी सरपि सुन्दर स्वाद पुनीत।
छन महँ सबके परुसिगे चतुर सुआर विनीत।।

पंच कवल करि जेवन लागे। गारि गान सुनि अति अनुरागे।।
भाँति अनेक परे पकवाने। सुधा सरिस नहिं जाहिं बखाने।।
परुसन लगे सुआर सुजाना। बिंजन विविध नाम को जाना।।
चारि भाँति भोजन विधि गाई। एक एक विधि वरनि न जाई।।
छरस रुचिर बिंजन बहु जाती। एक एक रस अगनित भाँती।।
जेंवत देहिं मधुर धुनि गारी। लै लै नाम पुरुष अरु नारी।।
समय सुहावनि गारि विराजा। हँसत राउ सुनि सहित समाजा।।
एहि विधि सबहीं भोजन कीन्हा। आदर सहित आचमन दीन्हा।।

देई पान पूजे जनक दशरथ सहित समाज।
जनवासेहिं गवने मुदित सकल भूप सिरताज।।

पद - १६३

देखन के अइले बहार हो सियाराम सियाराम जी।
रामजी अइनी पहुनमाँ हो दर्शन के अइले बहार हो।।
खोआ के सखि गिलवा बनावल, बरफी के ईंटा जोड़ाई हो।
ईमिरती जिलेवी के जंगला लगावल,गुलजामुन के खम्भा लगाइ हो।।
सेव खुरमा के कोरइ लगावल,पापड़ से छजनी छजाई हो।
खाजा के सखि झाड़ लगावल,मालपुआ के चन्दवा तनाई हो।।
गुलजामुन गुलसकरी मिठाई, लड्डू लटकेना लगाई हो।।
पूड़ी कचौड़ी बिछौना बिछावल, दही के पोचारा दियाई हो।।
तरकारी फरकारी हथकारी जनावल, रैता बहुभाँति बनाई हो।।
अरुआ अरुई रचिके बनावल, आलू के तरकारी हो।।
केला करैला कटहर बड़हर, परवल के फरकारी हो।।
कदू कोहरा घेवरा मुरई, रामतरोई के फरकारी हो।।
साग भंटा सोआ मेथी, सेम के फरकारी हो
अदौरी दनौरी तिलौरी मुंगौरी, हाथन के हथकारी हो।।
बरी बारा फुलौरा फुलौरी, छाज भिजौंरा हथकारी हो।।
अचार के कौन विचार करी जी, चटनी बहु भाँति बनाई हो।।
आम कटहर तूत बड़हर, निमुआ के निमकी लगाई हो।।
मिथिला शहरिया से दहिया मँगावल, अमृत जोरन लगाई हो।।
रचि रचि सखि सब मड़वा सजावल, व्यंजन बहुभाँति बनाई हो।
सेहे मड़वा में बैठे चारों दुलहा, सखि सब गावत गारी हो।।
इत उत ताके इहो चारों दुलहा, धब धब गिरेला मिठाई हो।

भद भद गिरे मालपुआ इमिरिती, खर खर गिरेला खाजा हो।।
लड्डू पूड़ी कचौड़ी का बरनो, दही चीनी बहि जाई हो।
'प्रेमासखी' दुलहा छवि निरखत, अधर सुधारस पाई हो।।

पद -१६४

सोने के झारी कमला जल भरि भरि चरण पखारे मिथिलावासीजी।
चरण पखारि चरणोदक लीन्हें अति बड़ी भाग हमारी जी।।
सुर नर मुनिगन विष्णु प्रजापति सब सन विनय हमारी जी।
आओ सजन पाँव दोउ पखारन बार बार बलिहारी जी।।
गलियन गलियन फूल सजावल मखमल पांवड़े बिछाई जी।
तेहि पांवड़े पर चले चारों दुलहा शोभा बरणि न जाई जी।
चानन काठ के पिढ़ई बनावल हीरा लाल जड़ाई जी।।
पांतिन पांतिन पिढ़इ बिछावल दुलहा के बैठाई जी।
दरसन लागि रंगीली छवीली सखि सब गावत गारी जी।।
गारी के मधुराई में सखि व्यञ्जन सुधि बिसराई जी।
'प्रेमसखी' दुलहा छवि निरखत चरण कमल मन लाई जी।।

पद -१६५

धन धन जीवन लेखो री रघुवर छवि देखो।।
जेवन आय महानृप दशरथ, चारों सुत लिय संग रे,कि अनंग रे,
चहुँचन्द रे,मनफन्द रे, अँखियाँ लखिके भई दंग रे,आली रूप निरेखो।।
चरन पखारि बैठाय सुपीढ़न, पत्तल मनिन सँवारी दै,पै सुहारी दै,
तरकारी दै,भसकारी दै,ता ऊपर से रस गारी दै,पकवान अलेखो।।

जो न बरात पूरो नृप पाये, काहे न लाये निज जनियाँ को,
हाँ बहिनियाँ को, पितिअइनियाँ को, फुफुअइनियाँ को,
कोउ हरत न उनकी जोवनियाँ को, अजमाय के पेखो।।
तिनसै साठि नारि में इक नर, सत निबहन वर भारी हाँ,
कबहूँ नहिं होति छुटकारी हाँ, जनकहिं दीजै दो चारी हाँ,
होइहैं जग सुजस तिहारी हाँ, जो न राखति हो लगवारी हाँ,
सुनि लागो न तेखो।।
गारि गाय सखि वलि वलि जावैं,चारों भैयन की गढ़नियाँ पै,सुमिलनियाँ पै,
मुसुकनियाँ पै,अति मोदित 'मोद' तकनियाँ पै, परित्यागि निमेखो।।

बुझौअल

१. तीस चरण महि चलत नहीं श्रवण नयन छत्तीस।
सो तुम्हरो रक्षा करैं नौ मुख देहिं असीस।।
२. चकती सोहैं वरुन पै बगहा पै असवार।
पला सहित कवि गङ्ग कहे शुंभ हो राजकुमार।।
३. एक चिड़ैयां अटक लकट के नदी किनारे चरती है।
चोंच तो उसकी सोने की है दुम से पानी पीती है।।
४. बाप के नाम से पूत के नाम नाती नाम कुछ और।
ई बुझौअल बूझ के दुलहा उठइहैं कौर।।

पद -१६६

तिल भरि गारि ने दै छी सुनु कथा कहै छी।।
एकटा रहथि श्रीरघु महिपाल, भेलथिन हुनक चन्द्रवति बाल,

राजा नारि रखी अनगिनती, रति विनती विललाई।।
अपराजिता राजकन्या बिनु, काहु न सुख सिधि पाई।
नाथ कृपा बिनु सो न लहति हैं, सदग्रन्थन यह गाई।।
सरस उक्ति सुनि रस रस जेंवहि, रसिया चारिउ भाई।
'मोद' मुदित निज सिय पै वारति, आनन्द सिन्धु समाई।।

पद-१६८

गारी गावत राजदुलारी जेंवत रामजी लला।।
रतन सिंहासन तापर आसन राजत अवध बिहारी।
चारों भैया मिलि जेंवन लागे देत सखी सब गारी।।
खाजा खुरमा तपत जलेवी पापर पूआ सुहारी।
आपहुँ जेंवे भरतजी से पूछे लाल कैसी बनी है तरकारी।।
ठन गन लखन करत मड़वा पर किछु लागत नेग हमारी।
हीरा मोतिन लाल जवाहिर सम्पति सकल तुम्हारी।।
सोर भयो चहुँओर जनकपुर धाये सकल नर नारी।
'प्रियासखी' वारति तन मन धन सुन्दर रूप निहारी।।

पद-१६६

वर मँह बड़-बड़ बात सजनी वर मँह बड़-बड़ बात।
मिथिला में नहिं आयल कहियो एहन अजब बरियात।।
पहिनहिं आबिके सासुर बैसला इ सबके अछि ज्ञात।
हिनके वेद पुकारि कहै छथि पुरुष पुरान अजात।।
समधी छथि दस सेहो छथि रथ समधिन छथि सत सात।
एक एक पर सत्तरि सत्तरि होइत हाएत उतपात।।

तीन मास पहिने बरियाती अयला हिये ललात।
ओतए तिया सब तरपैत होइथिन तारा गनिते रात।।
गंगा जमुना सरजू पुरखिन छथिन भुवन बिख्यात।
छकल छिनारी पाप छिनै छथि छन में छुविते गात।।
दूषण सब भूषण भए गेलनि जुरिते सियजू सँ नात।
'मोद' मगन सुर जय कहि वर्षहि सुरतरु सुमन सिहात।।

पद -१७०

ऐ प्यारे रसिया, प्यारे रसिया राजकिशोर।
जेमिय व्यंजन रुचिर हमारे हेरि कृपा की कोर।।
है अनूप गुन रूप तिहारे अचरज भरे अथोर।
हौ सांचे कि तो साँची कहिये प्रश्न के उत्तर मोर।।
लोकपती तुमको बतलावैं चारिहुँ श्रुति करि सोर।
रावरो बहिनि अहै लोकहिं में तिन पति में क्या निहोर।।
जगत पिता तुमको जग जानत मानत में नहिं खोर।
भै ताते निज पितहूँ को पितु चाल निराली तोर।।
सब जग सार तुमहिं बतलावैं सन्तन मतो बटोर।
भरत लखन रिपुसूदनहूँ के सार में क्या तब जोर।।
नाम पितामह को अज तेरो आपहुँ अज यह घोर।
'मोदलता' को बेगि बताइये सिय दूलह चितचोर।।

पद-१७१

प्रिय पाहुँन रुचि सँजेमि लिय,छमि भूल चूक गुनि अबुधि तिय।।

आहाँक जोग किछु बनलो नै व्यंजन से बिचारि सकुचाइय जिय।
भावक भूखल स्वभाव अहाँक सुनि पुनि पुनि अति हुलसाइय हिय।।
जानब तखन कहब आहाँ जखनहिं अमुक वस्तु कने और दिय।
किंचित बचन बजैत लजाइ छी परम कृपालु कहाइ छी किय।।
जनि लजाउ निज कुलाचार पर सन्त सुखद अति अवध धिय।
'मोद' मुदित मन विनती सुनावथि सिरकिन लखि लखि सीय पिय।।

पद –१७२

जनि मनहिं लजाउ कनै और पाउ यो।
बनल अनोन सनोन जेहे किछु जानि गँवारि छमा छाउ यो।।
प्रेमीजन चितवन मुसुकन हित तरसैत छथि तकि मुसुकाउ यो।
मिलत दहेज चाहब जे जे से ताइला उदासी नै मन लाउ यो।।
मिललनि सीता दुहुँकुल तारनि हिनक आदरभाव हिय लाउ यो।
हँसमुख पाहुन नीक कहाइ छथिहँसैत 'मोद' हिय बसि जाउ यो।।

पद –१७३

पाहुन कहू कोना, गुन सुनि सुनि मन सकुचाइये।
अहाँक बहिनि सँ जे नेह करैए, सेहे अहाँ के सोहाइऐ।।
जकरा पर अहाँ नजरि करै छी, तकरे गर लपटाइऐ।
लोक लाज कुल कानि अपनपौ, कनैक कनैक क खाइये।।
तव कुल कन्या परम विलक्षणि, कनिको नै सरमाइऐ।
एक पुरुष संग सुख नै करैऐ, तीनू लोक बौआइऐ।।
नख सिख सुखमा देखि अहाँ के, काम बेकाम बुझाइऐ।
'मोद' अवध के नागरि अनतह, कुलटा बनि बनि जाइये।।

पद- १७४

दुलहा रामजी लला ! तुम सकुचत कस चितचोर।।
जेंवहु व्यंजन रुचिर हमारे व्यंग बचन सुनि मोर।
तुम तो श्याम काम छवि लाजत मातु पिता कस गोर।।
गारी ससुरपुर सुनि रघुनन्दन हँसत सुलखि मुख मोर।
'कृपानिवास' हरषि सखि गावैं जुरि जुरि सियाजू की ओर।।

पद-१७५

भाई मिथिला, मिथिला शहर गुलजार रे।।
जहाँ बसत श्रीराजा जनकजी सब भूपन शिरताज रे।
मिथिला की छवि लखि सब चकित हैं दशरथ के चारों कुमार रे।।
मिथिला की शोभा लखि देव सब तरसे दशरथ सहित परिवार रे।
मिथिला शहर की छोटी छोटी गलियाँ बीचे में चौक बाजार रे।
ऊँचे चउतरा चढ़ि राम जी बैठे बहिनी बेचे के रोजगार रे।
शान्ती के मांगे लाख रूपैया सरयू के मोहर हजार रे।।
बड़की के माँगे अर्व खर्व लों छोटकी के दाम अनमोल रे।
राजा न लीन्हें प्रजा न लीन्हें ले गये तपसी उढ़ार रे।।

पद-१७६

रघुवर सुनिये मधुर सुर गारियाँ।।
मैया तुम्हारी अधिक सुकुमारी काम दिवस मतवारियाँ।
मामी वो मौसी फूआ तुम्हारी इनकी प्रसिद्ध कुचालियाँ।
मामी तुम्हारी कुमग पर नाचे लोग हँसे दै तारियाँ।
बहिनी तुम्हारी बाग बिच बिहरे प्यार करे सब मालियाँ।।

सारी अवध की नारी छिनारी यार बुलावें अटारियाँ।
'हरिभजन' हरषिहरषि सखि गावति यहि विधि सरहज सारियाँ।।

पद –१७७

छयलवा को देहौं चुनि चुनि गारी।
छप्पन भोग छतीसो व्यञ्जन आनि धरी मणि थारी।।
जेंवत लालन सिद्धि सदन में गावत सरहज सारी।
अति सुकुमारी राजकुमारी शान्ता बहिनी तुम्हारी।।
देना तो चहिये राजकुमर को लै भागे जटाधारी।
ऐसी रीति जो राजमहल की बाहर काह गुजारी।।
लूटि न जावे अवधनगर की सिगरी कन्या कुमारी।
जेंवत लालन मृदु मुसुकावत 'सियाअली' बलिहारी।।

पद –१७८

क्या अजब रंगदारी ललन ससुरारी की गारी।
बड़े भाग बना आये जनकपुर पाये सरहज सारी।।
प्राणहुँ ते प्रिय पाहुन मेरे सुनिये बात हमारी।
शोभा धाम श्याम सुन्दर वर रूप अनूप तिहारी।।
कैसे बची होयगी तुमसे अवधुपुरी की नारी।
औरो बात सही मैं जानति तुव कुल की उजियारी।।
अति उदार मुनिजन जेहि जाँचत ऐसी बहिनी तुम्हारी।
जिनकी चाह करत सारे जग तिनकी का रखवारी।।
मिथिलापुर की गलिन गलिन में विहरै शान्ता कुमारी।
'सियाअली' निज बहिनी के गुन लीजै हिय में बिचारी।।

पद -१७६

रस की गारी सुनो, सुनो अवध छयल चितचोर।
सुन्दर सांवलि रूप तिहारो, विश्व विलोचन चोर।।
पहिले चोरेव अवध तियन को,अब आये इत ओर।
ऐसी रीति तिहारो लालन, जग में करत अँजोर।।
छोड़े बनहिं पिता कन्यन को, ऐसो तुम वरजोर।
हँसन फँसन में फाँसि 'सियाअलि' बने हौ राजकिशोर।।

पद -१८०

रसिया राघो लला, तोहें गारी सुनैहौं और।।
जेंवत से प्रभु हाथ न रोकिय, और उठाइय कौर।
सारे जग की रीति और है, तुम्हरी रीति कछु और।।
जो चाहै तुमसे मिलवे सो, शान्ती को पकड़त दौर।
ताही ढिग तुम रहत हौ प्यारे,भाइ बहिन येक ठौर।।
सरजू में नित केलि करत हौ, सारे जग में सोर।
'सियाअली' कछु और जेंइये, जीवन धन चितचोर।।

पद-१८१

रंगीली गारी रस रस दीजै।।
अवध छयल दिलदार यार को, बहु लज्जित नहिं कीजै।
गुरु बहिनी में बिहार करत जो, सो चरचा नहिं कीजै।।
अवधलली इनकी अति प्यारी, तिनको काह पतीजै।
'सियाअली' उनकी क्या कहनो, संत शान्ति रस भीजै।।

पद -१८२

नैनन भरि लखि लैहौं, ललन को गारी न देहौं,
सखि ये जीवन धन दुलहे को, कहि मृदु बैन हँसैहौं।।
विश्व सुखद इनकी बहनी जो, तिन उपमा नहिं पैहौं।
सुन्दर छवि इनकी बहिनी युत, हियरो मांह बसैहौं।।
नित सुख शान्ति बसैं मिथिला में, लइहौं भागे जो पइहौं।
'सियाअली' दोउ भाइ बहिन पै, बार बार बलि जइहौं।।

पद -१८३

छयल अलबेला ललाजू, गारी खूब सुनैवै ।।
दृग पुतरिन को पीढ़ा बनैबै, अँखियन महँ बैठैबै।
छरस रुचिर छत्तीसहुँ व्यंजन हित सों आनि जिमैबै।।
ससुरारी की गारी है प्यारी सुनि सुनि के न लजैबै।
एके बहिन आपके लालन हम पूछैं केहि देबै।।
केते जतन करत हैं मुनिजन तुव बहिनी के पैबै।
बिनु शान्ती सुख लहत न काहू झूठ तनिक ना कहबै।।
सब जग चाह करत शान्ता जू के कहँ कहँ उनहिं पठैबै।
दीजै बहिन दान मिथिला में 'सियाअली' यश पैबै।।

पद -१८४

जेमू जेमू ललीवर श्यामसुन्दर,इ स्वाद अनत नहिं पायब यो।
छथिपाक कुशल मिथिलानी सकल, बहुव्यंजन कतेक गनायब यो।।
मुख कौर धरब मुंसुकैत रहब, हम अलिगन नयन जुड़ायब यो।

जे वस्तु चाहब मधुरे सँ कहब, हम हर्षित आनि जेमायब यो।।
जौं लाज करब बर हानि लहब, सकुचैत भूखल रहि जायब यो।।
छथि सारि सकल छवि रंग रंगल, मिथिलापुर शान्ति बसायब यो।
वर संत सेवल जग भ्रमैत रहल, हम रस गरि गारि सुनायब यो।।
ससुरारि भेटल अनुराग भरल, से भाव हिया बिच लायब यो।।
लली प्रेमपगल छथि मन सँ ढरल, निज भाग्यक धन्य मनायब यो।
भुज अंश धरब संग जेमैत रहब, लखि 'पद्मलता' बलि जायब यो।।

पद -१८५

जेमथि रसिक बिहारी, मुदित मुनि सुनि सुनि के गारी।।
व्यंजन विविध भाँति सँ परसल, जगमग मणिन के थारी।
रतन जड़ित बाटी भरि अगनित, साग परम रुचिकारी।।
जेमथि विहँसि लली संग लालन, गान करथि नव नारी।
काम कला में कुशल अवध तिय, पुरुष सुनै छी अनारी।।
तृप्ति ने पावि सकल जग विहरथि, मदन विवश मतवारी।
संत जनन के तकने घुरैछथि, बहिन अहाँ के छिनारी।।
पाहुँन केहन सुकृत अहाँ कैलहुँ, मिथिला में भेल सरोकारी।
दुलहिन एहन अनत कहाँ पवितहुँ, 'पद्मलता' सन सारी।।

पद -१८६

पाहुँन अहाँक जेवनार यो देखि किछु ने फुरैए।
व्यंजनक ऐछ भरमार यो केओ गनि ने सकैए।।
कुन्द पुष्प सन भात लगैए, राहरिक दालि स्वर्ण झलकैए।
ताइ में परल घृत ढारि यो, कते गम गम करैए।।

अदौरी-दनौरी-तिलौरी-फुलौरी,मिथिला में सबसँ प्रसिद्ध कुम्हरौरी।
बरा बरीक सँचार यो, सेहो देखिते बनैए।
रंग विरंगक भुजिया भाजा, पापड़ लगैए जेना टटके खाजा।
अगनित चटनी अँचार यो, जिया चटपट करैए।
भाँति भाँति के साग रुचिकारी, षट्रस मधुरस सब गुनकारी।
मिथिलाक एहे व्यवहार यो, किय अचरज लगैए।।
मालपुआ-हलुआ और पूड़ी कचौड़ी, दही चीनी खोआ सकरौरी,
मधुरक लागल कतार यो, आँखि अहीं के गरैए।।
रुचि रुचि जेमू कियक सकुचाई छी, चारिहु भैया के हम चकिते देखे छी।
छी आहाँ भदेसक गमार यो, 'पटरानी' कहैए।।

पद -१८७

मत मनिहऽ मन में बुरा हमर सुनि बात हो रघुनन्दन।
ई गारी हऽ ससुरारी के सौगात हो रघुनन्दन।
कच्ची पक्की और परसिहैं हम तो चटनी चूरन।
लगै चटपटी जगै भूख सुठि व्यञ्जन रूचैं हुजूरन।
जानत बानीं गोरकू लगिहैं आँखि चढ़ाके घूरन।
तबहूँ ना हम बन्द करबि जब तक न बोलबऽ पूरन।
चाहे बैठल बैठल बीते सारी रात हो रघुनन्दन।। ई०।।
ना हम तोहके बोलि पठवलीं ना कोई लिखलीं पतिया।।
बिनु पनहीं के पैदल अइलऽमुनि के बनल सँघतिया।
लखि अनूप अमराई ललचल युगल भ्रात के मतिया।
इहवें रहि जइतीं हरदम यदि गुरुजी दें अनुमतिया।

मन सोचत केहि विधि जुटे जनकपुर नात हो रघुनन्दन।। ई०।।
कौशिक मुनि से आज्ञा माँगे जनकनगर दर्शन के।
उत्कण्ठा तो अपने मन में ओट लिये लछुमन के।
आयसु हो तो नगर दिखाउँ ज्यों पण्डा तीर्थन के।
गइल गुमान भये न्यौछावर यदपि चले बनठन के।
फुलवारी के तो दशा वरणि नहिं जात हो रघुनन्दन।। ई.।।
प्रथम दृष्टि में बाहर बाहर नगर रम्यता देखी।
तबहीं दोनों राजकुमर के बिसरि गइल सब शेखी।
अन्तर नगर निकाई के तो बतिये निपट अलेखी।
जहाँ जाई मन तहँइ लुभाई पलकनि तजी निमेखी।
धनु मख मण्डप दिशि चितवत चकित चिहात हो रघुनन्दन।ई.।।
टूटल धनुष कौन विधि से सब जानत मिथिलावासी।
ईस काहि धौं देहिं बड़ाई की भई दूरि उदासी।
सिर झुकाय जयमाल पहिरलऽ ऊ झाँकी एक खासी।
पत्री गइल अवधपुर हरषल बरसल आनन्द रासी।
सब सराबोर भये बिनु बादल बरसात हो रघुनन्दन।। ई.।।
चौदह भुवन उछाह व्याह सुनि लगी होन तैयारी।
रथ गज बाजि ऊँट वृषवाहन भूषन वसन सँवारी।
बाहन विविध बराती सुर नर मुनि मन हर्षित भारी।
अनुपम सकल समाज किन्तु एक वर बैठे ससुसारी।
लखि जग निहाल बिनु दुल्हा के वरियात हो रघुनन्दन।। ई.।।
मन वांछित सुर दुर्लभ सुख लहि नित नूतन अनुकूले।

सारे अवध निवासी जन निज घर दुआर सब भूले।
तीन मास से पहुनाई में खाय खाय सब फूले।
गारी सुनि रस भरी अटपटी मुग्ध मनो रसगूले।
उत अवध तियनि के तारा गिनत प्रभात हो रघुनन्दन।। ई.।।
धरी रसोई सकल परिसके बैठे चारों भाई।
ग्रास उठावत बनै नहीं बस रहे मन्द मुसुकाई।
कथिनी में तो कन्दुक इव लेवैं ब्रह्माण्ड उठाई।
कथिनी से अब उठत नहीं एक लड्डू सरिस मिठाई।
अब ढँकि रूमाल मुख मन्द मन्द मुसुकात हो रघुनन्दन।। ई.।।
एक दिन दाल भात अरु गो-घृत परसे सबके आगे।
औ़र वस्तु परसत-परसत में अवधी धीरज त्यागे।
लै आचमन पञ्चकवली करि चटपट जीमन लागे।
'व्यञ्जन' तो सब परसि लेन दो सुनत सकल सकुचागे।
अब दुविधा में कर सिमटत बनै न खात हो रघुनन्दन।। ई.।।
वासमती के चिउरा लखि मुँह सभी परस्पर ताकें।
'कइसन एहिका पेड़ होत है' कहैं जवान दबा के।
व्यंजन और विविध विधि के लखि इत उत तकैं चिहा के।
एक कहैं चुप रहो नहीं तो हँसे लोग मिथिला के।
कहैं 'मिथिलावासी' अद्भुत जुटल जमात हो रघुनन्दन।। ई.।।
अनत वेद मन्त्रन से पूजा इहाँ अटपटी बानी।
सिलवनि गाल सेकाये लालन लछुमन सरिस गुमानी।
धान कुटाय लगाये गुलचा नाक पकड़ि मिथिलानी।
चलत न एकहु चाल चतुर के हो गये पानी पानी।
अब 'नारायण' दिशि सैननि हा हा खात हो रघुनन्दन ।। ई.।।

पद-१८८

चितलाय सुनहु चितचोर छैल धनुधारी अवधविहारी।
सारी सरहज की प्रेम भरी रस गारी अवधविहारी।
और वस्तु तो सुलभ अनतहूँ यह तो सुलभ यहाँ हीं।
यह रस स्वाद मधुर गारी को और ठौर कहुँ नाहीं।
चुनि चुनि हम तब गुनगन गावहिं सुनहु गुनहु मन माँही।
कबहुँ रसिक सुनि हँसहिं ठठाके कबहुं मन्द मुसुकाहीं।
नित रहै विलसती यह विनोद फुलवारी अवधविहारी।।१।।
नाम निरंजन खंजन दृग में अंजन फिरत लगाये।
चोरी कही निषेध स्वयं चितचोरत फिरत पराये।
चोरी कुशल चोर कहियत जो दृग कज्जलहिं चुराये।
कज्जल की को कहै विश्व के लोचन चोरि खपाये।
इस चोरी औ बरजोरी पर बलिहारी अवधविहारी।।२।।
रहैं अवध जहँ बध न होय पर फिरत विरद वर बाँधे।
भृकुटि धनुष प्रत्यंचा बरुनी तिलक रेख शर साँधे।
जुलुफ फन्द कर शर निषंग कटि कसे शरासन काँधे।
कत्ल होय रिझवार आपहीं होय नहीं यदि आँधे।
तउ लगत सबहिं प्रिय ऐसे अजब शिकारी अवधविहारी।।३।।
यज्ञ कलश के जल पीके युवनाश्व जने मान्धाता।
साठ हजार सुतन की जननी सगर नारि विख्याता।
धनि रविकुल के पिता लालजी धनि रविकुल की माता।
धनि रविकुल की कन्याएँ धनि रविकुल के जामाता।
कोई शृंग और कोई जटा कमण्डलधारी अवधविहारी ।।४।।

कोई तुम्ब[१] से कोई कुम्भ[२] से कोई कलश के जल[३] से
कोई खीर[४] से कोई नीर[५] से कोई फूल[६] कोई फल[७] से
कोई शंख[८] से कोई चक्र[९] से कोई कमल[१०] के दल से
कोई आकाश[११] से कोई पाताल[१२] से कोई प्रहार पत्थल[१३] से।
धनि प्रसव प्रणाली अवध की जग से न्यारी अवधविहारी।।५।।

तब कुल कन्या कबहुँ न काहू राजकुँवर संग व्याही।
लहि लहि औचक दान तुल्य सब सन्तन सदा सराही।
पाये च्यवन सुकन्या ऋषि सौभरी पचास निबाही।
शान्ता गले मढ़ी श्रृंगी के विदित सकल जग माँही।
यह अहै कृपणता या उदारता भारी अवधबिहारी।।६।।

विवश्वान की कन्या यमुना अब तक रही कुंआरी।
मनु की कन्या इला बरी बुध वन वन भटकि बिचारी।
गुरु वशिष्ठ की कृपा भई तब वर दीन्हों त्रिपुरारी।
एक मास तक रहै पुरुष बनि एक मास तक नारी।
जग और कहाँ अस पुरुष कहाँ अस नारी अवधबिहारी।।६।।

अंचल ओट बचैं रघुवंशी नारि करै रणरंगा।
कोई सेवैं कपिला कोई करैं कपिल से दंगा।
कोई कर्मनाश प्रगटावै कोइ प्रगटावै गंगा।
अद्भुत सकल चरित्र ललन रघुकुल का रंग विरंगा।।
विश्वास हेतु देखहु इतिहास उघारी अवधबिहारी।।८।।

नोट- १.सगरपुत्र २. वशिष्ठ जी ३.मान्धाता ४. रामजी ५. और्वऋषि के द्वारा सगर की गर्भ में रक्षा ६.नासिकेत ७.अज ८.भरतजी ९.शत्रुहन जी १०. ब्रह्माजी ११. रघुनाथ जी १२. लखनलाल जी १३. अश्मक।

कहैं सासु सच कहो लालजी कितने पिता तुम्हारे।
अग्नि गीध दशरथ कौशिक सब सुनियत पितु पद धारे।
एक पिता के चारि कुँवर क्यों दुइ गोरे दुइ कारे।
है कछु भेद वेद एहि भासत यह अनुमान हमारे।
नहिं जानि परत है कैसी मातु तिहारी अवधबिहारी।।६।।
दूषण सकल भये भूषण जब तिया सिया सी पाये।
देह नगर दशरथपुर तजि हरि अब विदेहपुर आये।
जनक जमाई बने जभी से जग में धाक जमाये।
सिय प्रसाद वर भये ललन सिय वरमाला पहिराये।
अब 'नारायण' उर बसहु सहित सिय प्यारी अवधबिहारी।

पद -१८६

कौना गुमान में भुलइलऽ हो राघोजी,कौना गुमान में भुलइलऽ।।
बड़ बड़ जतन कइलन दशरथ कौशल्या तब उनकर ललना कहइलऽ।
बिना बुलवले मिथिला में आइके सेतिहा में सबके भेटइलऽ हो।।
बक्सर में पहुँचे से पहिले अवध में कौन पुरुषारथ कमइलऽ।
ताड़िका के मरलऽ अहिल्या के तरलऽ मिथिला के राह जब धइल।।
पहिले त मोहनी मुरतिया से ठगि ठगि मिथिला सकल बस कइलऽ।
भइलऽ चकोर फुलवरिया में जाइके सिया के सुरति पर ठगइलऽ।।
चलल विरद बाँधि सोभा संग्राम ठानि नूपुर के धुनि सुनि डेरहलऽ।।
शरद भोर छूटल पसीना ललाट पर पढ़ल लिखल सब हेरइलऽ।।
शुचि मन रघुवंशी कहा के वचन मन से अइसन अझुरान अझुरइलऽ।
सायं के सन्ध्या विधि पूर्वाभिमुख कइके दूषण विधि हिमकर पर धइल।।

रहलऽ तूँ करिया अन्हरिया सरिस जब अवध शहरिया से अइलऽ।
गोरी किशोरी श्रीजनक लडैती के छाया परत हरियइलऽ हो।।
धनुहा के तोरि जयमाला पहिरि के रघुबर बहुत गरबइलऽ।
खोलत किशोरी कर कंगन कपत कर नाहीं खुलल तब लजइलऽ।।
सबका के बन्हलऽ तूँ माया के बंधन में मिथिला में अपने बंधइल।
सब जग जुड़ाय तोहरा आश्रय में आके तूँ मिथिला में आके जुड़इलऽ।
सब जग ग्रहीता तूँ दाता जगत के दानी शिरोमणि कहइलऽ।
मिथिला में दाता जनकजी उदार अति जिनकर ग्रहीता तूँ भइलऽ।।
और और ठौर सर्व देवन शिरमौर होके वेद के ऋचा से पुजइलऽ।
आय ससुरारी में सारी और सरहज के गारी बिनाना अघइलऽ हो।।
वेद प्रतिपादित अजित होके सखियन से कोहवर के जुआ में जितइलऽ।
पाहुँन 'नारायण' के हारि नजरबन्द होके मिथिला से बाहर ना गइलऽ।।

पद -१६०

रघुवर ! बड़े भाग्य से मिथिला में ससुरार पवलऽ जी।
धनुष तूरिके पुरुषारथ के गर्व न मन में करिहऽ ।
एक एक गौरव मिथिला के चुनि चुनि हिय में धरिहऽ।
इहवें विश्व विजय कल कीरति के भण्डार मवलऽजी ।।१।।
एक एक मिथिलापुरवासी सकल सुकृत के राशी।
सकल सुकृत संकल्प कर दिये सकल जनकपुर वासी।
तब निज बँहियन अवधबिहारी बल बरियार पवलऽ जी ।।२।।
गुरुता और कठिनता धनु के लखि मनहीं मन थाके।
कृपा कटाक्ष प्राप्ति हित रघुवर हारि सिया दिशि ताके।
सिय दिशि ताकत ही हरि ताकत अपरम्पार पवलऽ जी ।।३।।

आज्ञा दई सिया धनु को कर अटकर इनके बल का।
बिनु प्रयास जितना उठा सकें हो जा उतना हलका।
तब तूँ धीरे से धरि धीर धनुष के पार पवलऽजी ।।४।।
सिय संकेत समुझि शिवजी निज धनु को यही सिखाये।
जैहो टूटि राम कर परसत गुरुतर हाथ पराये।
अइसन आशुतोष के एहिजे परम दुलार पवलऽ जी ।।५।।
कौशिक मुनि के जन्तर मन्तर माँ गिरिजा के बानी।
प्रेमीजन के मंजु मनोरथ पुनि मिथिला के पानी।
तब तूँ दूनो भैया भृगुपति के ललकार पवलऽ जी ।।६।।
पाँच बरस में सहज उठाई बाँया कर बैदेही।
पन्द्रह वर्ष किशोर उमर में धुनष उठाये तेही।
फिर भी सिर नवाय सिय सन्मुख सिय कर हार पवलऽजी ।।७।।
सकल जगत में दानि शिरोमणि बिना विवाद कहइलऽ।
जनकपुरी में जनकराय के दान-ग्रहीता भइलऽ।
गुरुजन सन्मुख सिय सी सुन्दरि हाथ पसार पवलऽ जी ।।८।।
मिथिलापति से ससुर सनेही सासु सुनैना माई।
श्रुतकीरति माण्डवी उर्मिला सारी परम सुहाई।
सरहज सिधि प्यारी और लक्ष्मीनिधि से सार पवलऽ जी ।।९।।
सकल नगर नर नारि यहाँ के धर्मशील शुचि सन्त।
पुर चहुँदिशि सर सुभग वाग वन वारहमास वसन्त।
दुर्लभ सकल लोक में अइसन यहाँ बहार पवलऽ जी ।।१०।।

गारी प्यारी ससुरारी की अमृत हूँ से मीठी।
नीक लगे तो औरी खातिर जल्दी लिखिहऽ चीठी।
बुझिहऽ होली के त्यौहार पर उपहार पवलऽ जी ।।११।।
'नारायण' के व्यंग्य वचन सुनि तनिको बुरा न मनिहऽ।
सिया बहिन के नाते पाहुन सखा अपन करि जनिहऽ।
ई तो गारी के मिस सार-हृदय के प्यार पवलऽ जी ।।१२।।

पद-१६१

जे जे पूछतानी बतिया बताऊ पहुना।।
एगो बतिया सुनिके मन में लागे अचरज भारी,
खीर खाय बालक जनमावें अवधपुरी की नारी,
कहीं, साँची साँची किछु ना छिपाऊ पहुना।।
औरहुँ एक रीति रघुकुल के सारे जग ते न्यारी,
कुल की सारी राजकुमारी ले गये कमण्डल धारी,
कइसन रीतिया ई हमें समुझाऊ पहुना।।
मातु पिता गर गोरे होते गोरे छोरा-छोरी,
आप श्याम क्यों जब गोरे दशरथ कौशल्या गोरी,
एहि दुविधा के तनिका मिटाऊ पहुना।।
कोटि मनोज लजावन शोभा लखि 'प्रताप' बलिहारी,
कैसे इससे बच पायेंगी अवधपुरी की नारी,
एहि से मिथिले में अब बसि जाऊ पहुंना।।

पद -१६२

ऐ पहुना ! अब मिथिले में रहु ना।

जवने सुख बा ससुरारी में तवने सुख बा कहुँ ना।
रोज सबेरे उबटन मलिके इत्तर से नहबाइब,
एक महीना के भीतर करिया से गोर बनाइब,
झूठ कहत ना बानी तनिको मौका एको दहु ना।।
नित नवीन मनभावन व्यंजन परसबि कंचन थारी,
स्वाद-भूख बढ़ि जाई सुनि सारी सरहज की गारी,
बार बार हम करबि निहोरा औरो किछुओ लहु ना।।
कमला विमला दूधमती में झिझरी खूब खेलाइब,
सावन में कजरी गा गा के झूला खूब झुलाइब,
पवनदेव से करबि चिरौरी हौले हौले बहु ना।।
रहत कहत किछु दिन मिथिला में मन अइसन रमि जाई,
अवध नगरिया के पाहुन ! सपनों में याद न आई,
सुनि बतियाँ गोरकू दुलहा के टेढ़ी हो जाय भहुँ ना।।
घर ना हऽ ई ससुरारी हऽ एतना बुझिहऽ पक्का,
बड़े बड़े लोगन के ससुरारी में छूटे छक्का,
लाल लाल अँखियाँ देखलइबऽ तनियो डरबि हमहुँ ना।।
हमर निहोरा रघुनन्दन से माने या ना मानें,
पर ससुरारी के नाते 'परताप' के आपन जानें,
या मिथिले में रहि जइयो या संग अपने रखि लहु ना।।

पद -१६३

मिथिला से अब जनि जइहऽ पहुनमां इहें बसि जइहऽ।

ससुरारी बसला में नाहीं जग हँसाई,
देखऽ हरिहर के भेलन घर जमाई,
तूहूँ जनि तनिको लजइहऽ पहुंनमां।।
वर बिन बारात आवे में ना अचरज बा,
तब बिना वर के जाये में का हरज बा,
जे पूछी इहे समुझइहऽ पहुनमां।।
वसि जइबऽत बढ़ी मिथिला के कान्ती,
मिथिला निवासी सब पाइ जइहें शान्ती,
सबकर आस पुरइहऽ पहुनमां।।
मिथिला के ओर भइलऽ तजि के भवनमां,
यश 'परताप' चढ़ल असमनमां,
दिन दिन कीरति बढ़इहऽ पहुंनमां।।

नित्य जेवनार के पद - १६४

रघुवर जेंवत जानि एक सखी अंचल दै हँसि बोली जू।
सुनहु लाल तुम काके जाये सत्य कहहु सब खोली जू।।
सुनहु प्रिया हम नृप दशरथ के जासु सुयश श्रुति गावें जू।
भूपति गौर श्याम तुम लालन हम कैसे पतियावैं जू।।
सुनहु चतुरि हम श्याम न होते को शृंगार रस गावैं जू।
हमरे श्रीजनकलली रस के रस बिनु बोले पिय आयो जू।।
कहहु कमल मकरन्द मधुर हित भँवरहिं कौन बुलावैं जू।
'रामचरण' सखि मरम वचन सुनि सब सखियाँ मुसुकावैं जू।।

पद -१६५

मिलि जेंवत श्रीरघुबीर बने सखि संग लिये मिथिलेश लली।
भुज अंश दिये बहियाँ जू लसैं बिहसैं मृदु मंजु अनंग रली।।
करि कौर सिया मुख देत पिया कहि स्वाद सराहत भाँति भली।
रस के निधि दम्पति रंग भरे निरखैं चहुँओर किशोर अली।।
मणि मंदिर में झलकैं प्रतिबिम्ब मनोज के मानो विहार थली।
अवधपुर नित्य विहार करैं लखि 'अग्रअलीजू' की आस फली।।

पद-१६६

जेंवत कुँवर रसिक रघुनन्दन रस आगरि नागरि सिय प्यारी।।
छप्पन चार छऊ रस उपरस भोग सौज सुखकारी जू।
चिन्तामणि चौकिन पर कोमल दुग्ध फेन सम सारी जू।।
तिन ऊपर रुचि जानि युगल की रचना न्यारी न्यारी जू।
फल रसमय अंकुर कंदाली मेवा मधुर सुधारी जू।।
चटनी निकर अँचार मुरब्बा अमित भाँति तरकारी जू।
परसत परम किशोर नागरी जानि युगल रिझवारी जू।।
सुरभिवन्त शीतल सरयू जल मंत्रित कंचन झारी जू।।
रस भीनी बतियन विरमावत प्यावत निज कर वारी जू।
दम्पति एक थार महँ जेंवत मोद कन्द मुद भारी जू।
'अग्रअली' के जीवन दोऊ तृण तोरत बलिहारी जू।।

पद -१६७

दोउ जेंवत हास विनोद मगन रस रंग उमंग अंग अंग बरसैं।
परसि परस्पर स्वातिक भाँतिक ग्रास उठे मुख ना परसैं।।

स्वकर सुधा रस कौर सिया को राम जिमावत हित दरसें।
दृगकोर सिहाय सुभाग भरे कर चूमि महा हिय में हरषैं।।
गीत वाद्य नव तान तरंगनि संग सुहागिनि सुख सरसैं।
'कृपानिवास' प्रसाद मिलै मोहि जाको महामुनि मन तरसैं।।

पद -१६८

सुनिये रसिकराय रघुनन्दन प्रीति रीति युत गारी जू।
तुम तो श्याम स्वामिनी मम गोरी यह अचरज बड़भारी जू।
जो पै लाल आप रुचि होवे तो हम बात बिचारी जू।।
कछुक काल मिथिला में रहिये होय नागरि सुकुमारी जू।
श्रीलक्ष्मीनिधि के महलन में रहिये रूप उजियारी जू।।
मनभावतो टहल पिय करिये श्रीसिधि के रुचिकारी जू।
तब तुम गौर वरन पिय पैहो मम स्वामिनी अनुहारी जू।।
हँसि हँसि कहहिं परसपर सब मिलि सुखद सुखेन बिचारी जू।
सुनि मुख मोरि हँसत रघुनन्दन 'कामदेन्द्र' बलिहारी जू।।

पद -१६६

मिलि जेंवत प्रीतम संग सिया दोउ मंगल मोद बढ़ावैं हो।
कौर परस्पर देत चन्द्रमुख मन्द मन्द मुसुक्यावैं हो।।
भोजन विविध परोसति विमला कमला विजन डुलावैं हो।
सोभा सिन्धु कही न परै कछु माधुरी कुँज सुहावैं हो।।
चन्द्रकला सखि झारि लिये कर सरयू जल अँचवावैं हो।
'रामसखे' प्रभु थार प्रसादी रह्यो अवशेष सु पावैं हो।।

पद -२००

मिलि जेंवत श्रीरघुनन्द सिया दोउ नवल माधुरी कुंज लसैं।
रस मत्त परसपर रूप छके करकंज कौर मुख देत हँसैं।।
बहु व्यंजन भाँति अनेक बने षट चारि अमी रस लै परसैं।
नव वैस किशोरी चहूँदिशि बाल खड़ी अनुशासन को तरसैं।।
अनुराग भरी रस रूप छकी मुसुक्यान मनोहर चित्त ग्रसैं।
सुख सिन्धु अमी बिच 'रामसखे' मन मीन रसिक छवि जाल फसैं।।

पद -२०१

मिलि जेंवत श्रीरघुनन्द सिया हिय निरखि निरखि सखि मोद भरैं।
बैठे रतन जड़ित मणि पीढ़न घन दामिनि दुति मन्द करैं।।
व्यंजन विविध सुधारि सुघर सखि कर कमलनि मणि थार धरैं।
परसत गान करत पिक बैंनी मधुर मधुर मृदु सप्त सुरैं।।
कोउ कर पानि पात्र मणि झारी सुन्दर सरयू नीर भरैं।
पिय प्यारी मुख चितवत सब अलि देत जबै चित चाह करैं।।
कवर सुधारि परस्पर शशि मुख देत जबै छवि कहि न परैं।
'रसिकअली' यह रस अद्भुत दृग निरखि न्यौछावरि प्रान करैं।।

पद-२०२

भोजन करत भावते जीके।
अरस परस दोउ खात खवावत सो सुख जानत लोचन हीके।।
कीन्हों कछुक मनोरथ प्रीतम देत बनाइ ग्रास मुख सी के।
हँसि चितई भरि नयन माधुरी रहि गयो कौर हाथ ही पी के।।
पंच भाव तर यह रस दुर्लभ सो मुख जानत अलिगन नीके।
'हरि सहचरी' मनोरथ मन के कृपा साध्य मिथिलेश लली के।

पद -२०३

अचमन करत राम सिय प्यारी।
श्यामा पान लिये कर ठाढ़ी रमा लिये जल झारी।।
चन्द्रवती खर्का दर्पण लिये चन्द्रकला सुकुमारी।
सुभगा लिय वागौ प्रीतम कौ सहचरि लिये सिय सारी।।
करि अचमन बैठे सुख आसन सकल जनन सुखकारी।
'रामसखे' बलि बलि दम्पति छवि सुन्दर बदन निहारी।।

पान पद - २०४

भोजन करि बैठे पावत पान।
गोरी नवल किशोरी सियाजू प्रीतम श्याम सुजान।।
कोउ अलि फूल माल पहिरावति अतर करावति घ्रान।
बीड़ी बदन अधर छवि छलकत मन्द मन्द मुसुकान।।
प्रीतम हँसि प्यारी तन हेरत अरुण नयन अलसान।
प्यारी कर गहि उठे लाल तब 'रसिकअली' सुखदान।।

पद-२०५

पान लैलउँ यतन सँ लगाय, पावि कने बूझू मजा।।
नागर पान प्रेम सँ रचि रचि, मधुर मसाला मिलाय।। पावि.।।
मोती चून दुगुन रस कथ में, स्वाद कहल नहिं जाय।। पावि.।।
दूंगी केशर लौंग इलायची, मादक रस सरसाय।। पावि.।।
पायब पान कहब आहाँ सब सँ, मिथिलानिक गुनगाय।। पावि.।।
लैत परस्पर पान अधर सँ, अनुपम रंग दर्शाय ।। पावि.।।
'पटरानी' केर प्राण सजीवन, हेरू मधुर मुसकाय।। पावि.।।

पद - २०६

बीड़ी देहौं मैं नागर पान की।
कथ चूना अरु लवंग सुपारी और लगाऊँ मन मान की।।
आवो ललाजी चौपर खेलैं बाजी लगाऊँ जिय जान की।
'जनहरिया' हारे रघुनन्दन बीड़ी इई सनमान की।।

पद-२०७

रंगीले लाल बीड़ी लीजै मेरे कर से।
नागर पान सुगंध सुपारी मधुर मशाला सरसे।।
मोती के चूना मनहर कत्था पावत अति हिय हरसे।
'अग्रअली' सिय पिय मुख दीन्हीं अधरन पर रंग बरसे।।

मिथिला के डोम का पद - २०८

डोमवा कवरवा धैले ठाढ़े हो लाल।।
बहुत दिनन से दुलहा आसा लगौले बानी से दिनमां आजु मोरा आइल।
ई तो जुग जुग से बबुआ हमरे चलि आवे से अबकी के पारी हमार।।
एहो जूठन के बबूआ सुरनर मुनि तरसे से भगतन के होला अधिकार।
कुरमिन वारिन इत उत चितवे दुलहा पत्तल हमरो चोरैहैं हो।।
कर जोरि जोरि दुलहा विनती करत बानी डोमवा के आपन जनिह।
कहथिन 'रामा' भक्त आशा चरण के दुलहा नेक नयनमां तनि हेरिह।।

मिथिला की डोमिन का पद -२०९

ए दुलहा आपे से लागी नजरिया, तो पर मैं वारी संवरिया।।
शिर पर चीरा कमर पट पीरा पहिरे जामा केशरिया।

गले बिच हीरा चभत-मुख बीड़ा विहँसत करे कहरिया।।
छैला छबीला रंगीला नुकीला ओढ़े गुलाबी चदरिया।
भौहें कमान तान नैन बान मारे भरि भरि के काजर जहरिया।।
मिथिला की डोमिन अवध में बसवों जूठन बटोरब भरि थरिया।
अधर सुधारस दुलहा के चखि चखि ऐसे बितैहों उमरिया।।
अब राउर पिछवा ना छोड़बो चलबों मैं अवध नगरिया।
नौशे छवी विलोकत रहबो घर आँगन कचहरिया।।
सरयू स्नान जब जैहो सियावर सांझ सबेरे दुपहरिया।
महावर चरण प्रभु निरखत रहबों अँचरन बहारब डगरिया।।
रंग महल के टहल बजइबो बिन बिन डगरा दउरिया।
'नेहलता' दुलहा छवि निरखत प्राण जीवन धनु-धरिया।।

डोमिन की बेटी का पद - २१०

हमारा नेने चलियो रामजी अवध नगरी।
बहुत दिनन से आस लगाओल रंगव हो रामजी पियर चुनरी।।
नित उठि सियजू के मुहमां निरेखब रखब हो रामजी तोहर मरजी।
सरजू के तीरे तीरे डगर बहारब पुरब हो रामजी हमर अरजी।।

अथ चतुर्थी विधान प्रारम्भ

जगावन पद -२११

प्रात काल सिय कोहवर द्वारे मधुर मधुर सुर बाजत बीन।।
मृग नयनी सिय सखि पिकवयनी चन्द्रकला आदिक युवतीन।
हिय उमगावत वीन बजावत गावत भैरव राग प्रवीन।।

बार बार करवट लै सोवत लाल सकल आलस वश कीन।
मानहुँ सफल मनोरथ होकर सोवत सुख से चिन्ता हीन।।
कबहुँ कबहुँ पग पायल की धुनि खींच लेत बरबस मन छीन।
'स्नेहलता' चाहत अब जागन रस रस उचटन लागी नीन।।

पद -२१२

आबू आबू हे सजनी ललन जगला।
विखरल केश लेपायल चानन, पसरल काजर रतिया बला।।
अरुण नयन अलसायल निहारथि, पल झपलाय न चल किछु कला।
अधर मधुर मुसकान मनोहर के न देखि जग मोहत भला।।
रतन जटित मणि चौकी राखल उतरि उतरि तेहि पर बैसला।
'स्नेह' देल झटपट उठि दतमनि कंचन झारि सलिल कमला।।

दुलहाक अपटन पद -२१३

मणि के मलसिया भरी तेल अपटनमां हे अपटावथि वर के,
केवो लेल अतर फुलेल।।
एहो अपटौनी दुलहा मैया नहिं कैलनि हे अपटावथि वर के,
बचपन के बांकी रहि गेल।।
अपने के मैया सबके एकोटा नै दोषवा हे अपटावथि वर के
अयोध्या के तिरिया ढहलेल।
गावि गावि मिथिला नारी अपटन लगावथि हे अपटावथि वर के
'स्नेह' भरि करति झमेल।।

चतुर्थी पूजनार्थ पुष्प चयन पद - २१४

बाबा के दुलारी बेटी श्रीजानकी बेटी हे।

अम्मा देलीं डलवा बिनाई की जाहु जाहु बेटी फुलवा लोढ़े हे।।
फुलवा लोढैते बेटी अलसाइ गइलीं हे।
सूते बेटी अँचरा डसाइ की ओही लली फुलवरिया भीतर हे।।
घुमत घामत अइलें रामचन्दर बबुआ हे।
ऊपर से डमरू बजाये की जागु जागु मलहोरिन बिटिया हे।।
मलहोरिन होखस तोरी सुनरी बहिनियाँ हे।
हम त जनक बाबा के लाड़ो की फुलवा लोढ़े फुलवरिया अइली हे।।
जौ रौआ हई श्रीजनकजी के बेटी हे।
हमहूँ दशरथ जी के बेटा की रौवे लोभे फुलवरिया अइलीं हे।।
जौं रौआ हईं श्रीदशरथजी के बेटा हे।
मोरा आगे पोथिया बिचारू की एही लली फुलवरिया भीतर हे।।
पढ़ल लिखल सब भुलाइ गइलीं हे।
पोथी मोरा छूटल बनारस किशोरी जी के आगे मूरख भइलीं हे।।

मंगल पद- २१५

मंगल आजु जनकपुर मंगल मंगल हे।
मंगल तनेउ वितान गान धुनि मंगल हे।।
मंगल गाइके गोबर अंगना निपाइले हे।
गजमोती चौक पुराइले कलश धराइले हे।।
मंगल श्री कमला जल कलश सब मंगल हे।
मंगल आम के पल्लव दीप सोहे मंगल हे।।
मंगल महिसुर ब्राह्मण वेद उचारहिं हे।
मंगल गौरी गणेश पूजन विधि मंगल हे।।

मंगल दुलहिनि चारू दुलह चारू मंगल हे।
मंगल सखि सब गावहिं घर घर मंगल हे।।

कंगन छोरन पद - २१६

गजब बनी गुण खानि ये सियाजू की कंगनियाँ।।
छोरनि कलानिधान कंगन छोरत हारे भूलि गये सब अभिमनियाँ।
शिवधनु तोड़ि अभिमानी बनि आयो वर मिटि गयो गर्व गुमनियाँ।।
गाँठ मरम नहिं पाये नवल वर छोरत परत उलझनियाँ।
'योगेश्वर' जीवन धन हारि हिय ललीजू की जोहैं चितवनियाँ।।

पद -२१७

ये न होइबो धनुष की तोड़िबो, कठिन कंकण गाँठि छोड़िबो।।
देखें अब तुम्हारी चतुराई, कैसे पाहन नारी बनाई,
जाके मुनि के जग्य कराई, मारे निश्चरगण समुदाई,
ये ना होवे मारीच मद मोरिबो ।।कठिन.।।
जाके जनक सभा पग धारे, कैसे क्षत्रिय के मद मारे,
तुमसे परसुराम लड़ि हारे, सो तुम पड़ि गये फन्द हमारे,
इहाँ चलिहें ना नयना मरोरिबो ।।कठिन.।।
मोहे जनकपुरी की नारी, वे तो सारी लगे तुम्हारी,
आखिर अबला आई बिचारी, तिन्हें बिना हथियार न मारी
ये न होवे पराई चितचोरिबो ।।कठिन.।।
तुम रघुवंशी कुँवर कहाये, जग में अगनित यश फैलाये,
कबहुँ हारे ना शीश नवाये, कह द्विज गुरु को शीश नवाये,
अब सीखो लली को कर जोड़िबो ।।कठिन.।।

पद-२१८

खुलत नहिं कंगना खोलि खोलि हारे।।

सोने का थार भरा है जल से, सियाजू के हाथ हैं जल में कमल से,
नैना भ्रमर भये सारे।।

बूढ़े राजा बूढ़ी रानी, हम सब जाने राम कहानी,
कैसे खोले विचारे।।

प्रीति की गाँठ जियत नहीं छूटे, धनुष नहीं जो तुरतहिं टूटे,
खड़े हैं जनकजी द्वारे।।

पीटहिं ढोल देहि सब गारी, जीति गई हैं जनकदुलारी,
जीती सिया तुम हारे।।

पाटी-बिछाई पद -२१६

कौने रंग बहिना कवने रंग पहुंना से कौन रंग हे
सखी सुमनक पटिया।

गोरे रंग बहिना श्यामल रंग पहुँना से लाले रंग हे।
समटथि बहिना ओछावे हँसि पहुंना से लाले रंग हे।
सजवथि पहुँना कहथि अली जहिना से लाले रंग हे।
वैसलनि बहिना दहिन भए पहुंना से लाले रंग हे।
गावे 'पटरनियां' निरखि वर कनियाँ से लाले रंग हे।

पद -२२०

सुमनक पटिया ओछाबू अवधेशिया, बैसब गरभुज धारि,
पाहुँन कोवर सजाबू सम्हारि।।
सीखू ललन कोबरे सँ बिछाओन, प्रेमक पूँजी विचारि।।
अपन कला दरशाबू लली सँ, सस्ते भेटल ससुरारि।।
सेवा करब अहिना दुलहिन के, आइए सँ लीऔन सकारि।।

कोमल चरण लली पटिया समेटथि, दुलहा बिछौलनि हारि।।
'पद्मलता' हैत टेढ़ बिछावन, सुनब हजारन गारि।।

घूँघट पद -२२१

हमरा किशोरी जी के निरखय लगला पाहुँन चितचोर,
सखि घूँघट हटौलनि कि भेला विभोर।।
जगमग जोति लागे चूनरी के ओट,जेना पूनम इजोर,
खोललनि दृग पट बनि गेला चकोर।।
नेह सँ भरल नव नीरज समान, कजरारी दृग कोर,
हिय सुमनक बान चोट मदन मरोर।।
सुधा रस बरसैत मन्द मुसुकान, लाल लालिमा हिलोर,
छनि चुमैला बेहाल पहुनाक दूनू ठोर।।
रूप छवि माधुरी छकैत प्रिय पहुना, भेलैन सरावोर,
दुलहिन 'पटरानी' पैला भाग्य छनि जोर।।

चोटी - गुथाई पद -२२२

प्रिय पाहुन ! चिकुर सम्हारू, कोमल छथि प्यारी हमर।
मणि कंघी सँ नहुँ नहुँ झारू, कोमल छथि प्यारी हमर।।
रेशम सँ बढ़ि केश हिनक छनि, कने तेल चमेलीक ढारू।।
मणि मुक्ता के चोटी गुथल छनि, कने अपन कला सँ सम्हारू।।
बेनी गुथि सिन्दुर बिन्दी दै, कने लली मुखचन्द्र निहारू।।
'पद्मलता' यहि माधुरी सुरति पर, कने तन मन धन न्यौछारू।।

पद -२२३

प्यारी जू प्रीतम अहाँक प्रेम बस कहु की कीनै करै छथि ये।

अनुछन छटा छकैत रहै छथि एक टक पल न टरै छथि ये।।
छथि अव्यक्त व्यक्त बनि चरण अलक्त भरै छथि ये।
अति आशक्त जकाँ उन्मत्त जकाँ मस्तको धरै छथि ये।।
पाटी सिटै छथि चोटी गुहै छथि टुटक डरै छथि ये।
लीलहुँ कृपा कोर भोरि ते पद पद्म परै छथि ये।
सीता जापक जन के ऊपर अतिशय 'मोद' ढरै छथि ये।।

पद -२२४

श्रीसिय प्यारी ये, परम मंजु अथि अहाँक कंज दृग कोर।
प्रीतम टकाटकी लगौनहिं रहै छछि, बनि मुखचन्दक चकोर।।
कर पर चादर चरण धरि सादर,चित्रित करै छथि चितचोर।
परम सौभाग्य गुनि आनन्द झुमै छथि, चुमै छथि प्रेम विभोर।।
मकृका कपोल कण्ठ केशर कस्तूरी, ठगै छथि तिल दै सुठोर।
उमगि उमगि अङ्गराग रंगै छथि, रङ्गि अनङ्ग रस बोर।।
ततसुख सुखी रुख रखिते रहै छथि, नैनहिं भरने निहोर।
नख सिख साजहीं में हाजिर रहै छथि, 'मोद' रसिक सिरमोर।।

पद-२२५

स्वामिनी सियाजू के शरण प्रसादे, से हम सब आहाँके पौलौं यो लाल।।
अहौंक भाग्य भल भेल पुनीता, सीताकन्त कहौलौं यो लाल।।
लाड़िली नित गणपति गोहरौलनि, गिरि गिरीश मनैलनि यो लाल।।
अनुपम नेम प्रेम निबहैलनि, लखक हेतु ललचैलनि यो लाल।।
मातु पितहिं परमानन्द देलनि, अहौंके पूरण कैलनि यो लाल।।

परिजन पुरजन प्रजापूज्य जन, सबके हीय जुरैलनि यो लाल।।
सेवा भाव मुख्य दरसौलनि, अलिन 'मोद' सरसैलनि यो लाल।।
मैथिली प्रगट होय यहि मिथिला, उज्वल रस वरसैलनि यो लाल।।

पद -२२६

प्रीतम प्यारी अहाँक अनन्या।
रोम रोंम श्यामें रङ्ग रङ्गलनि त्यागि सकल रङ्ग अन्यां।।
श्याम वसन तन श्याम कंचुकी श्याम वरांक लसन्या।
अंजन पलक पूतरी श्यामहिं श्याम बिन्दु अधरन्या।।
श्याम मिलन हित सादर पुजलनि गणपति गिरिपति कन्या।
पल पल प्रेम प्राण पन ठनलनि सहज सुशील शरन्या।।
कंचन विपिन में कोरि मंगौलनि सहित प्रमोद रमन्या।
'मोद' प्रेम पथ में श्रीमैथिलि अहाँ सँ सौगुन धन्या।।

पद -२२७

प्रीतम बड़ प्रेमी छथि प्यारी।
तव अनुराग रङ्ग नयननि में छैन छायल अरुणारी।।
पीत रङ्ग कटि वसन रुचै छैन पीत उपरना धारी।।
पीत यज्ञ उपवीत विलोकिऔन पीतहिं खौर सम्हारी।।
सी सुनिये सम्भ्रम दौड़े छथि ता ततक्षण सब छारी।
सीता जापक जन पर होइछथि बार बार बलिहारी।।
अधरहिं धैने सदा रहै छथि रसिकराज रसकारी।
रहिऔन अहूँ सदा रुख रखिते रुख राखनि सुकुमारी।।
ई छी अहाँ कि ओहे अहाँ छी ई अगम्य गति न्यारी।
पगल प्रमोद 'मोद' मन्दिर में निबसू सदा सुखारी।।

पद -२२८

दुलहा रघुलाल विहँसथि कोवर भवन में।
छैनि घेरने सकल नवनारी, ओ सरहोजि सारी,देने मुख पर रूमाल।
छथि उमा रमा ब्रह्माणी, अमित महारानी, संग सियाजू के बाल।
कहु दुलहा मोहन मनहारी, श्रीअवध बिहारी, कोन कुल के इ हाल।
एक शान्तीवती छथि नारी, ओ परम छिनारी, जग घूमथि बेहाल।
जहाँ सन्त देखथि जटाधारी, महातम भारी, सुनु तिनकर हवाल।
छथि परम उदार बेचारी, टरथि नहि टारी,छैनि कुलटा के चालि।
चारू दुलहा चकित छथि भारी,ओ सुनि सुनि गारी, मिथिलानी के जाल।
सब अलिगन हँसथि दै तारी, मचत मोद भारी,'पटरानी' नेहाल।।

पद -२२९

एहन ससुरारि कोना पैलउँ यौ दुलहा, से कहू हमरा।
कौन जप तप कैलहुँ, से कहू हमरा।।
मिथिला शहर हमर बाबू के नगर, कोना ऐलउँ दुलहा,
शिवधनुष चढ़ैलौं।
गुरु विश्वामित्र छथि भारी जादूगर, कोना पैलउँ दुलहा,
नारी शिला के बनैलों।
ताड़िका सुवाहु मारि मारीच उरैलउँ से कहू दुलहा,
कोना जग्य के बचैलों।
मिथिला में आबि कोन जादू चलैलउँ से कहू दुलहा,
आहाँ सबके फसैलों।
हमरा किशोरीजी के जोड़ी नै जग में से कहू दुलहा,
कौना दुलहिन बनैलौं।।

'पटरानी' बनती किशोरीजी हमर आहाँ कहू दुलहा,
रहब मिथिले कोवर से कहू हमरा।।

जोग-टोना पद - २३०

जोग टोना हमरा लाड़िली के करैय कमाल।।
प्रथमहिं सियाजू जोग जगौलनि, मुट्ठी भरि में जगत समौलनि,
बिना बजौने पैदल ऐला . रघुवंशी के लाल।
दोसर सिया जू लोग जगौलनि, गर में जयमाला पहिरौलनि,
सिय छवि रूप माधुरी लखितहिं पहुंना भेला बेहाल।।
तेसर सियाजू जोग जगौलनि, वशीकरन कँगाना में कैलनि,
'पटरानी' वसि भेला दुलहा फसला यन्त्रक जाल।।

पद -२३१

जड़ी विकए वस करिया हे सखि मिथिला नगरिया।
सेहो जड़ी पीलनि दुलह मन हरिया, पिवते भेला वेखवरिया हे।।
झुमैत ठाढ़ भेला कोवर दुअरिया, दुलहिन पर परलैन नजरिया हे।।
हमरा किशोरी जी के थैलनि अँचरिया, नमन करथि बेरिबेरिया हे।।
अब कोना जैता पाहुंन अवध नगरिया, दुलहिन के बनला हजुरिया हे।।
'पटरानी' वसि भेला दुलहा साँवरिया, प्रमुदित सखि सहचरिया हे।।

पद -२३२

हम छी जोगिन वर भारी वो दुलहा।।
बिन नौका जल ऊपर चलै छी, संग में महल अटारी यो.।।
बिन विमान नभ ऊपर उड़ै छी, बिनु बादल बरषा करवै छी,

उपजै मिथिला में सारी यो.॥
नव दुलहा के मति घुरवै छी, प्रिय लागत ससुरारी यो.॥
'पटरानी' सिय चरण सेवै छी, नैन हमर बसकारी यो.॥

पद -२३३

हमरा किशोरी जी के मोहिनी, सुरतिया ओ माधुरी मुरतिया
मोहाय गेला हे, पाहुंन हुलसैत छतिया लोभाय गेला हे।।
घूँघट के ओट लागे दामिनीक जोतिया मोहाय गेला हे,
हे निरखितहिं पहुना जुड़ाय गेला हे।।
अरूण अधर सुधा वृष्टि होइय हँसिया मोहाय गेला हे,
पाहुंन सुधि वुधि सबटा भुलाय गेला हे।।
अंजन अजौने नेह भरल सु अँखिया मोहाय गेला हे,
रूप लखितहि पहुना बिकाय गेला हे।।
'पटरानी' छवि के छकैत राम रसिया मोहाय गेला हे,
प्यारी लाड़िली के रंग में रंगाय गेला हे।।

पद -२३४

सखि राजित राजकुमार लली संग कोवर में।।
मणिन मौर मौरी लड़ झलकै, सजने वियहुती श्रृंगार।। लली.।।
चन्द्रानन सँ अमिय जनु छलकैं, सुषमा अमित अपार।। लली.।।
अंग अंग मणि भूषण चमकै, गथित वसन जड़ितार ।। लली.।।
घूंघट तर छवि रूप माधुरी, प्रभाकरण उजियार ।। लली.।।
मनमोहन दुलहा दुलहिन पर, 'पद्मलता' बलिहार ।। लली.।।

पद -२३५

झाँकी झाँकि लिअ, सियवल्लभ के वर बाँकी।।
नवरंग मणिक सुमौर हुनक शिर, मौरि हिनक छवि छाकी।।
केशर खौर उतै जगमग जगैं, इत सिन्दुर सुखमा की।।
अंजन अंजित नयन दम्पति के, सम्पति सन्त हिया की।।
लय लिअ लोचन लाभ ललकि कए, 'मोद' परा रस छाकी।।

पद -२३६

सांवली सुरति पै सरकार, मैं न्यौछावर है गई।
मिथिला सर कंज सीय प्रेमी भ्रमर पिय, सुवश वसैं भरे प्यार।।
पियजू सजल घन सियजू तड़ित सन मुसुकनि वर्षावैं चितवन धार।।
राजैं भुज अंश धारे, नेहिन होवैं सुखारे 'मोद' निरेखैं छवि एकतार।।

पद -२३७

सिय बनरी के बननि विलोकु ऐ बना।
श्रीचरणकमलिया में ललित अंगुलिया वि., नगजरि नूपुर मंजुलिया।।
छीनी सुकमरिया पै कामदार सरिया वि.,कोरन मनिन मनोरिया।।
कंचुकि अमोलिया पै चारु चम्पाकलिया वि., चन्द्रहार पंचलरिया।।
हँसुली हजरिया पै हैकल हुमेलिया वि., झलकैं हीरन की हरिया।।
बाजू तीनधरिया बहूटा नगदरिया वि., पहुँची कंकण मुन्दरिया।।
विन्दुली टिकुलिया मांगटीका सुठि ठौरिया वि., 'मोद' लोचन ल जोरिया।

पद -२३८

शिर की पगड़िया ये तोरा अजब रंगदार दुलहा,
मदमाते नयनमां तुम्हार।।

कानों की कुण्डल ये कैसी लटक झलकदार दुलहा,
जनु चूमै कपोलना तुम्हार।
काले काले जुल्फैं ये तोरा अजब घुंघुरार दुलहा,
मन हरनी हँसनियां तुम्हार।
सियाअली तोरे पर बार बार जाऊँ बलिहार दुलहा,
मोरा होजा हियरबा के हार।

पद –२३६

सिया के सजन मन मोहले हमार आली।।
शिर पर टोपी जगमगैं कामदार आली,
अलकें छुटी है मानो अलिन केधार आली।।
बड़े बड़े नैना जल भरे मतवार आली,
भृकुटी धनुष सर तिलक लिलार आली।।
कानन कुण्डल रुचि कमल के प्यार आली,
नाशामणि हलन अधर अरूणार आली।।
भाव भरि चितवनि विहँसि निहाल आली,
धीरता न रही मैं तो भई बेसम्हार आली।।
दशन दवाइ ओठ छाती करधार आली,
कसकि बइठि रही नीची करि नार आली।।
देखिके रसीली छवि प्यारी बलिहार आली,
झमकि के अंक भरे भये उर हार आली।।
जेतो सुख भयो तेतो कहे कौन पार आली,
'नेह' सोई जाने जाकी रस हो शृंगार आली।।

पद -२४०

आई कोहवर में कनियाँ लगे छथि कोना।
सांझ सरसिज समटि सकुचायल जेना।।
मृगनयनी पलक के उठौती कोना, मुखचन्द्रक शोभा देखौती कोना,
छनि गोलक में प्रीतम समायल जेना।।
उमड़ैत नव नेह छिपौती कोना, पुलकैत छनि देह जनौती कोना,
झीन चुनरी में चन्दा नुकायल जेना।।
किछु बजती कोना 'पटरानी' सिया, श्यामसुन्दर पिया के वसौने हिया,
लाजवन्ती लगै छथि लजायल जेना।।

पद -२४१

सखि कोवर में अचरज एहन देखलौं,
आइ अँधरिया इजोरिया मिलन देखलौं।।
कनियां त पूनम के चाँद जकां चमकैं,
बर अनमन अमावस गगन देखलौं।। आई.।।
चम्पक वरनि सिया अंग-अंग रमकै,
दुलहा अपराजित सुमन देखलौं।। आई.।।
गोरी किशोरजी के रूप दुति दमकै,
मनहरिया के करिया वदन देखलौं।। आई.।।
हमरा लली के देखि बिजली ने थमकै,
बिनु बादल तड़ित श्याम घन देखलौं।।। आई.।।
'पटरानी' सिया छवि उपमा न समकै,
भेला पहुना नेहाल धन धन देखलौं।। आई.।।

पद -२४२

आब हम वारि देलौं यो, आब हम बारि देलौं यो,
प्रियवर आहाँक सुरति पर तनमन वारि देलौं यो ।।
बाँकी झाँकिहिं झँकाय, मनचित लेलौं अपनाय,
सुधि बुधि औ अपनमौ सब हारि देलौं यो ।।
चोखी चखनि चुभाय, केलौं विवस बनाय,
मन्द मधुरि हँसनि असि मारि देलौं यो।।
नोखे नवल सिकारि नवलनि मारि मारि,
रघुवंशक विरद बिगारि देलौं यो ।।
सुनु सुनु सियकन्त 'मोद' दायक अनन्त,
आव हम अपना के आहाँ पर न्योछारि देलौं यो ।।

पद -२४३

नै कहाइऐ केहुना, कोना कहू पहुना,
पल कलप बुझाइये आहाँ दुहुँक बिना ।।
सदा लखितें रहि, रुख रखितैं रही,
चित चखनि चहैऐ आब येहे चहना ।।
लखि सुषमा अपारी, आहाँ प्यारी पर बारी,
ओहो मुग्ध रहथि अहाँ लखि तहिना ।।
बीरा रुचिर बनावी, अति प्रेमसौं पवावी,
मुख पोछि सुखपावी से अकथ कहना ।।
दोउ मृग मारा मारी, देखी पट ओट टारी,
जेहि जोहे बिनु जाति न दृगनि दहना ।।

सीता सीतल करैया, सुन गुनु सिय सैंयां,
हिय निवसू सदैया मानू 'मोद' कहना ।।

पद - २४४

प्रीतम रंक सरिस भरि अंक रतन रस लूटैं री।।
क्या टिकि रही अटुट टका टकि कबहुं न टूटैं री।।
कसि भुज पास परस्पर सी पी, मत्त भये अधरासव पीपी,
दोउन दसन दसो दिसि दीपी, मती सहेलिनि केलि अमीपी,
चंचल चारू लंक कल अलक कपोलनि छूटैं री।।
अलियन लय मैरेय प्याला, प्याये मादक भरी निराला,
अरूभयो दोउ महारस जाला, सरुझन अगम भयो तिहुँकाला,
रसिकन सम्पति दम्पति जूट्यो बहुरि नहिं जूटैं री।।
कवि कोकिल रमताम्बर गायो, रमुक्रीड़ा श्रुति टेरि सुनायो,
यह रस रसिक सन्त अपनायो,पल पल 'मोद' परानन्द पायो,
नाम रटैं रस एक सों रसिक लहैं रस घूँटैं री।।

पद -२४५

मन होइया आहाँ के हम देखिते रही।
किछु बाजी आहाँ हम सुनिते रही।।
आइ आयल मिलन केर मधुर यामिनी,
बनि वैसलौं आहाँ ओ सिया स्वामिनी,
बिनु देखे लगइया युग सम घरी।।
आइ उठल हृदय में आनन्दक लहरि,
बात कहवाक जे छलक गेंलौ बिसरि,
किछु फुरा नै रहल की कही नै कही।।

कोन भरने छी जादू अपन दृष्टि में,
जे नहा गेलौं हम स्नेह के वृष्टि में,
आब मर्जी अहीं केर अहीं जे कही।।

पद -२४६

कहाँ केर कोहवर लाल ओ गुलाल हे ।
कहाँ केर कोहवर पान सँ छाड़ल हे ।।
अवधक कोहवर लाल ओ गुलाल हे ।
मिथिला के कोहवर पान सँ छाड़ल हे ।।
ताहि पैसि सूतै गेला दुलहा श्रीराम हे ।
सङ्गही में सूतलैन जनकजी के धीया हे।।
घूरि सूतू फिरि सूतू आर्यजीके पुत्र हे।
अहाँ केर धाम सँ आँचार मैल होई हे।।
एतेक बचन जखन सुनलैंन श्रीराम हे।
घरहुक सेज से बाहर देल बिछाइ हे।।
उठि गेलै बादर बरसे लागल मेघ हे।
ओलती लागल दुलहा रोदना पसारि हे।।
खोलू धनी खोलू धनी स्वर्णक किवार हे।
आजु केर राति में पलङ्ग पैंचा देब हे।
आजु करे राति में पलङ्ग पैंचा देब हे
हमर बाबू सँ आहाँ दहेज नहिं लेब हे।।
आहाँ केर बाबू सँ दहेज हम नहिं लेब हे।
हमरहु मायके जबाब आहाँ नहिं देब हे।।

सुहागरात कोहवर पद - २४७

कंचन भवन खचित मणि माणिक चन्दन के लागल किवार रे।
कदली के थम्भ कनकदल झलमल जोड़ा कलश गृह द्वार रे।
सप्त जलधि के उत्तान से बितान शोभे इन्द्रधनुष के शृंगार रे।।
भव्य भवन के विशाल भाल लाल सोहे चन्दन सरीखे बन्दनवार रे।
नील गगन घन वसन चँदोवा हे तारा के धारा हीरा हार रे।।
मुक्ता के जाल में प्रवाल पाँति माल मोहे झालर से छारल क्रीड़ागार रे।
जगमग जगमग ज्योति जगत है दीपक दिव्य अपार रे।।
गजदन्त सेज सुमन के बिछावन ऊपर से लागल है ओहार रे।
तेहि पैसि सोवलि सिया सुकुमारि हे सङ्ग कौशल्या के कुमार रे।।
मिथिला की महिला मुदित मन सुन्दरि गावति राग विहार रे।
'रंजन' राम सिया कोहवर जे गावथि पावथि शुभ फल चार रे।।

सुहागरात कोहवर पद - २४८

कंचन महल मणिन केर दियरा कंचन के लागल किवार रे।
गजदन्त सेज फूलन के बिछवना रतन के बनी हैं सिङ्गार रे।।
तापत सोवत रघुवर दुलहा सीता दुलहिनी सङ्ग वाम रे।
नील पीताम्बर रतन के भूषण राजत अङ्ग साँवर गोर रे।।
यों मुख फेरि सोवे रघुवर दुलहा दुलहिनि सोवे करि मान रे।।
कमल कपोल मुखपट लेइ पोछत फेरि फेरि हिया में लगाय रे।।
दुलहा दलहिनी अङ्ग परसि परस्पर हरषि नयन जल छाय रे।
'जनहरिनाथ' रघुनाथ सियाजी के आनन्द बरनि न जाय रे।।

पद -२४६

कहवाँ हीं उपजल नव रंग बिरवा हे,
कहवाँ हीं पसरल पान हे अनमोल दुलहा निनियें घुरमैं हे।।
अवध ही उपजल नव रंग विरवा हे, मिथिला हीं पसरल पान हे अ.।।
हँसि पूछू विहँसि पूछू रामजी दुलहा हे, देखै दीय दँतवा के जोति हे।।
कोना हम देखै देब दँतवा के जोतिया हे, मोरा दाँत अलख अमोल हे।।
हँसि पूछू विहँसि पूछू सियादाइ सुहवे हे, देखै दीय अँचरा के जोति हे।।
कोना हम देखै देव अँचरा के जोतिया हे, मोर अँचरा सूरजओ चान हे।।

पद-२५०

कोहवर के ये नजारे, नजरों से न गुजर जाये,
हररोज की चिरागें सखियाँ यहीं जलायें।।
चश्में फरश विछी हो अश्कों से यूँ सजायें,
जलती शमायें तेरी हर बूंद में दिखाये।।

पद -२५१

आज सुहाग की रात कोहवर रङ्ग भरी।।
दुलहा माथे मउरिया सोभे दुलहिन गले हीरा हार।
लाली पलङ्ग पर लाली बिछौना सोवत दुलहा दुलार।।

पद -२५२

आज सुहाग की रात सखी री, सुहेलरा गायो री।
सात सखी मिलि मङ्गल गावो सुघर बना पर बलि बलि जावो री।
दशरथजू के कुमार छयल छवि निरखि निरखि दृग हिय बिच धारो।

पद-२५३

ललन तुमको मिथिला में रहना पड़ेगा।
सरस मीठी गाली ही सहना पड़ेगा।।
तुम्हें प्रेम बन्धन में बांधा इसी से।
कि जो जो कहूँगी से करना पड़ेगा।।
सुबह शाम मिथिला के हाते के अन्दर।
नजरबन्द होकर टहलना पड़ेगा।।
न करना कभी चर्चा जाने का लालन।
अवधपुर को अब तो विसरना पड़ेगा।।
समझ लो यहाँ 'स्नेह' का ये पौजीशन।
कि स्पेशल औडर भुगतना पड़ेगा।।

पद -२५४

अली लखू, कोहवर की सुबहार।
दृग अरविन्द नींद बस अतिहीं होय रहे रतनार।।
आलस बस अब पलक अड़त नहिं, करत न मौर सम्हार।।
क्यों सकुचात सुघर वर प्यारे, प्यारिहिं लेहु निहार।।
करि आरती वारि पुष्पाञ्जलि, 'मोद' चलीं पट डार।।

माँथ झाँपी पद -२५५

सोनवां के मण्डप में मणि के छावनियां हे।
दाहिन बइठल दुलहा, बायें दुलहिनियाँ हे।।
चन्दा जइसन दुलहा शोभे, चाँदनी दुलहिनियाँ हे।
एक साथ मिलि गइले मोहन मोहनियाँ हे।।

चादर से झाँपि दिहले समधी चाँदनियाँ हे।
फेंकि के चादरिया दुलहा निरखे सजनियाँ हे।।
देखि देखि समधी के लागेला गरनियाँ हे।
तीन बार झाँपि झाँपि झाँपले चाँदनियाँ हे।।
कहत अलिन धिया समधी के शरणियाँ हे।
राखत जतन करि सेवत चरणियाँ हे।।

विदाई प्रकरण प्रारम्भ

बारहमासा पद –२५६

अब छाड़ि ससुरारि कहाँ जैहौं सरकार,
पिया रहि जइअउ मिथिला नगरिया में।
आब आयल पूस मास, हिय अतिहिं हुलास,
सब साजु सुख रास ससुररिया में।।
माघ शिशिर सुहाई लइहौं प्रेम की रजाई,
जाड़ा लगने न दूँगी बेअरिया में।।
फागुन फगुआ खेलायब, रंग घोरिक ले आयब,
रंग भरि भरि रंगिहौं पिचकरिया में।।
चैतमास ऋतुराज, फूले कुसुम दराज,
गजरा गूथि गूथि गेरिहौं सुगरिया में।।
माह आयउ वैशाख, तन तलफन लाग,
छयला तोहिके छिपइहौं छतरिया में।।
जेठ तपतलि बात, घाम सहलो न जात,
पिया चलने न दूँगी डगरिया में।।

माह आयउ अषाढ़, बुन्द बरिषैं अपार,
छटा घटा के लखइहौं कोठरिया में।।
आई श्रावण की बहार, करिहौं झूला के तैयार,
झूला झूलइहौं मैं लली फुलवरिया में।।
भादव भंरे नदी नार, नौका रचिहौं सँवार,
झुमि-झुमि झिंझरी खेलैहौं कमला सरिया में।।
आसिन सरद बहार, चन्द चाँदनी झलकार;
रास रचैहौं मैं कंचन मझरिया में।।
कातिक दुतिया मनायब, शान्ती एतहीं बोलायब,
बजरी मोदक पवैहौं, मणि थरिया में।।
अगहन उत्सव रचायब, गारी दे दे के जेमायब,
'मुद' अस कहाँ जस ससुररिया में।।

पद -२५७

एहन ससुरारी दुलहा कहु कहाँ पायब यो मिथिला जनि छारू,
कोहवर में रहियौ बारहो मास।।
सारी सरहज सब सेवे में रहती यो,मन की पूरत सब आस।।
जे जे आहाँ चाहब से से हम पुरायब यो.,कबहुँ न होय देब उदास।।
फुलवा के चुनि चुनि सेजिया बिछायब यो., ताही पर करब सुख विलास।।
हम सब संग ही में सुख से बितायब यो., 'रूपलता' त्यागि जग आस।।

पद -२५८

बसो किन राजा बना जनक नगरिया।
मृदु मुसुक्याय हरो मन मेरो डारी नेह रसरिया।।

रसिक रमन चितवन चितचोरन मारी नैन कटरिया।
यहि पुर बीच बसाय सजनपुर निकट विदेह बखरिया।।
सनमुख महल किशोरीजू की रुचि सुचि कनक अटरिया।
विमल चाँदनी चौक चिमन की सुतरु सुगन्ध डगरिया।।
सदा वसंत समीर त्रिविध जहँ बिचरहु मोद बजरिया।
ललना ललकि मिले नित लालहिं सीय सरिस प्रिय सरिया।।
सबहिं सनाथ करो राजा बनरे अति प्यारी ससुररिया।
हास विलास विविध विधि विलसहु करो परस्पर ररिया।।
करहिं कटाक्ष सुमुख मृगनैनी सरहज मारे नजरिया।
'मौन' मुदित नित अवध नगर को भेजत रहियो खबरिया।।

पद -२५६

छाड़ि ससुरारि ललन कहाँ जैहौ।।
मिथिला से जो अवध को जैहौ साँची कहो कब ऐहौ।
ए बेर आये सियाजू को पाये फिर ऐहौ कछु पैहौ।।
गारी देत सियाजू के नाते गारी के दुख जनि लैहौ।
'श्रीरघुराज' नागर ननदोई सरहज के सुधि जनि भुलैहौ।।

पद -२६०

ललन ससुरारि छाड़ि कहँ जैहौ, यह सुख कतहुँ न पैहौ।
सास ससुर सारी सरहज सब मिथिला विरह सतैहौ।।
मानि ननद नाते ननदोई फिरि बिधु बदन देखैहौ।
प्रमदावन भूलेहु जनि रघुवर निज कर पाति पठैहौ।।
जो तुम साँच अवध नृपनन्दन साँचि कहो कब ऐहौ।
'ज्ञानाअलि' तब सफल मनोरथ जब हँसि कण्ठ लगैहौ।।

पद -२६१

मनभावन दूलह रूप दिखावत रहिहऽ ए रघुनन्दन।
जइसे अबकी अइलऽ आगे आवत रहिहऽ ए रघुनन्दन।।
माथे मोर कान में कुण्डल लट लटकै घूंघरवाली।
चानन सोहैं लाल भाल पर अँखियन में काजर काली।।
मोतियन माला पड़ल गले में ओठवा पै पानक लाली।
आजु देखि ई रूप सुहावन अखियाँ सुफल भइल आली।।
कोटिन अनंग के छवि लजावत रहिहऽ ए रघुनन्दन ।।१।।
श्रुति पुराण तोहके पावे के राह अनेक बतावे ले।
पर ना नाजी तोहर कृपा कौने रहिया से आवे ले।
कृपा तोहार बुझाला तब जब सन्त कोई मिल जावे ले।
नारायण के कृपा होय तब जन जन दर्शन पावे ले।।
ई सन्त चरण के धूरि दिखावत रहिहऽ ए रघुनन्दन ।।२।।
हमनी दीन अकिंचन तोहरे सेवा जोग कहाँ बाटी।
मिथिला के पहुनाई अइसन ना कोइ आँटल ना आँटी।
ग्रहण करेलऽ भाव बस्तु प्रभु ! ना देखऽ मीठी खाँटी।।
बड़ा भरोसा आइल मन में जब से ई सुनले बाटी।।
ऐसहिं 'प्रताप' जनसे अपनावत रहिहऽ ए रघुनन्दन।।३।।

पद -२६२

सखियों के नजरों में रहना होगा,
प्रीति किया तो निभाना होगा।

साजन बनके कोहवर घर में रहना होगा,
जो जो कहूँगी सो सो करना होगा।
किसी दिन कोहवर घर में पूछेंगी सजनीं,
शृंगी ऋषि को कैसे ब्याह दियो बहिनी,
सच सच बात बताना होगा।।
अवध का नाम कभी मत लेना सजना,
मिथिले में बारहो मास होगा रहना,
सखियों की गाली भी सहना होगा,
इतना निठुर अब मत बनो जीजा,
अलियों को छोड़कर अब कहीं मत जा,
तुझ बिन आँसू बहाना होगा।।

पद -२६३

प्रीतम श्याम सुजान सजन संग चलना री आली।।
यहि मिथिलापुर जन्म भयो है शंकर गौरि पसाव।।
स्वामिनी शील निधान सियाजू बहुरि न बनहिं बनाव।।
धाम शिरोमणि अवध कोशला रसिक शिरोमणि राम।
विपिन शिरोमणि श्रीप्रमोदवन जहाँ सकल सुख धाम।।
जासु विरह पच्छी शुक सारो अति अधीर पुर देश।।
युगलप्रिया अब उचित न रहना चलना अवध विशेष।।

हो लाल पद -२६४

हम तो सुनीला सखि रामजी पहुनमां से विहने सबेरे घरवा जैहैं।
नीको नहिं लागे सखि घरवा दुअरवा से नीको नहिं लागेला भवनमां

जो हम जनिती सखि राम निरमोहिया तो पहिले ही किरिया खियविती।।
सांवली सुरतिया पै मनमां लोभैले से देखहु के भइले सपनमां ।
एक मन करे सखि हे साथे चलि जइती से लोक लाज सबके गँवइती।।
जो तुही जैहो रामजी अपनी नगरिया से हमनी के साथे लेले चलिह।
कहत 'महेन्दरमिसिर' राम जी पहुँनमां से नेहिया लगाके दगा कइलन।।

पद -२६५

मिथिला नगर तजि सिया जखन चलली हे कि कहियौन बहिना,
मिथिला खसल मुरझाय।।

कहलो न जाइया सखिया नृपति की गतिया हे,
नैना से अँसुवा झहरल जाय।।

विरहिन सुनैना रानी अंगना में कानथि हे,
जनु बिनु बछिया हुकरथि गाय।।

मुरुछि अहुरिया काटि सुगा मैना कानै हे.,
सिया सिया रटनि लगाय।।

समदावन पद - २६६

बड़ा रे जतन सँ हम सिया धिया पोसलौं सेहो रघुवर नेने जाय।
हाथी हथिसार रोवै घोड़ा घोड़सरवा रानीजी रोवत रनिवास।।
मिलि लेहु मिलि लेहु सङ्गकी सहेलिया आब सिया चलली विदेश।
आगू आगू रामचन्द्र पाछू पाछू डोलिया ताही पाछू लछुमन भाइ।।
एक कोस गेली धीया दुह कोस गेली तेसर कोस लगलै पियास।।
हाथ जोरूँ पैयाँ परूँ अगिला कहरिया बाबा दीयौ पनिया पिलाय।।
कौने रंग डोलिया कवने रङ्ग ओहरिया कौने रङ्ग बतिसो कहार।
लाली रङ्ग डोलिया सुबज रङ्ग ओहरिया लागी गेलै बतिसा कहार।।

जनकनगर में रोदन उठैत छै अयोध्या में बाजत बधाइ।
'लक्ष्मीपति' प्रभु गावैं समदौंनिया लिखल मेटल नहिं जाइ।।

श्री अवध में परिछन पद -२६७

सखि अलवेलो म्हारो प्राण पियारो।
आयो आजु अवध मिथिला ते कोशलनाथ अनोखो कुमारो।।
दुलहिन सहित चारिहू दूलह करवायो शिविका असवारो।
मातु करन लागी परिछन सब सियका घूँघट हुलसि उघारो।।
सिय मुख छटा राम मुख छाजति गौर वदन दरशो तनु कारो।
भोर भयो दशरथ रानिन को कस है गयो कुमार हमारो।।
मिथिला की नटखटी नागरी चेटक मन्त्र कछू पढ़ि डारो।
राई लोन उतारन लागी 'श्रीरघुराज' जाय बलिहारो।।

पद -२६८

सखी लखु सिय दुलहीं घर आई।
परिछन करि सब सासु उतारी पुनि पुनि लेत बलाई।।
पांवड़े डारत मनिगन वारत लै आई अँगनाई।
घूँघट खोलत कोटि शशी सम फैली फरस जोन्हाई।।
चितवहिं चकित देखि दुलहिन को आनन्द सिन्धु अन्हाई।
हेरि थकी सिय मुख पटतर छवि त्रिभुवन में नहिं पाई।।
कोशलपति सत सक्र साहिबी बार्‌यो मातु लजाई।
बदन विलोकि नेग देवे को कछु नहिं जिय ठहराई।।
सखि मिस गिरिजा गिरा इन्दिरा देखन हेतु सिधाई।
'श्रीरघराज' गुमान रूप को दीन्ह्यो बदन देखाई।।

सवैया

बनरी लखि दीप दुहूँ कुल की सरिता सरि गौरि सुमान सरेख्यो।
शत सप्त प्रभूति भरी गृह में मन चाहति सिद्धि खड़ी ढिग पेख्यो।।
मुख देखन योग्य सिया समता अरू ढूँढ़ि थकी सब लोक असेख्यो।
दै रघुनन्दन रत्न सियाकर सासु सकोच तऊ मुख देख्यो।।

मुँह दिखाई पद - २६८

मुँह दिखाई सिया की अजब गुइयाँ।।
शैर-कनक भवन के अहाते में भीर भारी है।
हजारों रानियों की आ रही सवारी है।
गगन में लग गया देवाङ्गनाओं का मेला है।
पुरी की नारियों का भी बड़ा झमेला है।
सब गावें सहाना अजब गुइयाँ ।।१।।
शैर-कैकेयी रानी ने उत्साह से घूँघट खोली।
देखती रह गई वह पीछे सम्हलकर बोली।
विश्व की शोभा न्योछावर है बहू के ऊपर।
रति रमा वाणी उमा कोई नहीं है पटतर।
है महल योग्य इन्हीं के सो मुबारक होवे।
नित्य नव केलि सुहागिन को मुबारक होवे।
सुखसो सब भाँति रहब गुइयाँ ।।२।।
शैर-रानी कौशल्या धीरमती मुजरा कर बस फूल गई।
मणिमाल पतोहू को अपने कर सो पहनाना भूल गई।

तब तुरत सुमित्रा रानी ने उनके कर में वह हार दिया।
कण्ठश्री दुलही को देकर अपना भी मनोरथ सफल किया।
मुख निरखि बधूको जियब गुइयाँ।।३।

शैर–इसी तरह से सभी रानियों ने मुँह देखा।
निछावरों की करे कौन कवि यहाँ लेखा।
अजिर में भूषणों की ढेर लग गई खुशतर।
सुमन से पाट दिया परियों ने मगन होकर।।
अनुरागिन सबकी सब गुइयाँ ।।४।

शैर–रानियाँ हट गई तब औरों की बारी आई।
शान्ताजी ने निकट बैठ उतारी राई।।
बारी बारी से दिखाने लगी श्रीमुख छवि को।
ताव किसको है जो निज दृष्टि से देखे रवि को।।
सब बिसरेउ कहब सुनब. गुइयाँ।।५।

शैर–जो आई रूप गुमान भरी इन्द्राणी आदि विवुध नारी
उनके दिल औ निगाहों में हो गई अजब इजरत तारी।
मुख है या अजब तमाशा है कहती जू 'कलंदर' टर ही गई
अपना ही मुख देखा उसमें अपना सा मुंह लेकर ही गई।
हम बोलब मिलब हँसब गुइयाँ।।६।

कवित्त

खोलि मुख दुलही को ननद लै नगीच बैठी,
देखिबे को युवतिन की जुरी यूथ बीसा है।

आगे से पीछे से दायें बायें से विलोकैं सब,
निज मुख दीखैं पै न वाको मुख दीखा है।।
फिरि फिरि जायँ फिरि फिरि आवैं पूछैं सब सासुन से,
काको यह तिलस्मात काको बकसीसा है।
'ग्वालकवि' आपस में अचम्भा सब मानि कहैं,
सीसा की बहू है कि बहू को बन्यो सीसा है।।

श्रीअवध में आरती पद -२७०

मुदित मन आरती करैं माता।
कनक वसन मनि वारि वारि करि पुलक प्रफुल्लित गाता।।
पां लागनि दुलहियन सिखावति सरिस सासु सत साता।
देहिं आसीस ते बरिस कोटि लगि अचल होउ अहिवाता।।
राम सीय छवि देखि जुवति जन करहिं परस्पर बाता।
अब जान्यो साँचहू सुनहु सखि ! कोविद बड़ो विधाता।।
मंगल गान निसान नगर नभ आनन्द कह्यो न जाता।
चिरजीवहु अवधेस सुवन सब 'तुलसीदास' सुख दाता।।

युगल झाँकी के पद २७१

सियाजू आज बनी गोरे गात।
चुरिया चमकन सरिया झमकन रचि रहि मेहदी हात।।
चरबन पान पीक झुकि गेरनि मन्द-मन्द मुसुकात।
'कृपानिवास' अलिन बिच बैठी रूप भरी इतरात।।

पद - २७२

छवि देखु रंगीली पाग की।

चकित भई मिथिला की नागरि भरि अँखियाँ अनुराग की।
राजत राजकुमारन के फवि रहे मनोहर भाग की।।
कलँगी झूकि रही मानो ऐसी कली कल्पतरु बाग की।
'सूरकिशोर' जनक कुँवरिन के अचल ध्वजा है सुहाग की।।

पद -२७३

रंग भरो व्याहन आया बना मेरो श्याम सलोना री ।
दशरथ राजकुमार ललन के अंग-अंग टोना री ।।
तैसी बनी दीप दामिनि अंग लज्जित सोना री ।
'युगलप्रिया' छवि सुधा पियो करि अँखियाँ दोना री।।

पद -२७४

ललन मोरी अँखियन प्यावो छवि प्याला।।
वारे ते मैं सिया संग लागी शरण मैथिली पाला।
अनत न जाउँ कतहुँ ना हेरूँ तुम बिन दशरथ लाला।।
अब आई तुम्हरे घर लालन दोउ मिलि करहु निहाला।
कृपा दृष्टि चितवनि पर बलि गई 'युगलप्रिया' नई वाला।।

पद -२७५

जादू भरी राम तुमरी नजरिया।
जेहि चितवत तेहि बस करि राखत सुन्दर श्याम राम धनुधरिया।
जुलफन जुत मुखचन्द्र प्रकाशित नाशामणि लटकन मनहरिया।
'युगलप्रिया' मिथिलापुर वासिनि फँसी जाल बिच मानो मछरिया।

पद -२७६

बनरा तोरी चितवनि मन लागा रे।

जब ते आये अवध नगर से मिथिला की रति जागा रे।।
हौ तुम सुन्दर श्याम सुभग वर सिय बनरी रस पागा रे।
'युगलप्रिया' की युगल भावना रसिकन मन अनुरागा रे।।

पद -२७७

बना तेरी अजब छटा छवि प्यारी।
फैल रही कौमुदी सहस सम पुर गृह गली अटारी।
जेहि पर परति करति न्यारी गति मति रति रंग उजियारी।
मोही मिथिलापुर वामा तिमि बाल युवा नर नारी।।
ऐसी गति अनूप मन ताकी कहु अमित भुवन लखि हारी।
'युगलअनन्य' सखी सिय सुन्दरि जोड़ी सरस सँवारी।।

पद -२७८

बना तेरी छवि पर वलि वलि जाऊँ।
ऐसी द्युति अनमोल लही कित कहो कौन विधि गाऊँ।
सौरभ सदन सरस सोहन तन सुखमा लखि हरषाऊँ।।
मोहनि मन उन्माद बढ़ावनि मधुर वचन हिये लाऊँ।
चितवनि चपल चित्त चोरन तकि छकि जकि होश गवाऊँ।।
प्रियवर वैन सुधा निन्दत सत सुनि सनेह सरसाऊँ।
'युगलअनन्यअली' दूलह लखि देह गेह बिसराऊँ।।

पद -२७९

अलवेला बना अनमोल ललित छवि सोहना।।
अंग अंग रस रंग विराजित साजित नख शिख सोहना ।
उपमा नैन निहारि निरस नित सम सुवरन मनि लोहना।।

अग जग ठगि रहे सुभग माँझ मुद माते सुख संदोहना।
'युगलअनन्यअली' चाहत चित चितवनि चमकनि जोहना।।

पद -२८०

बना तेरी बाँकी बनी सुकुमारी।
निरखो नवल नेह नयनन निज रूप अनूप सँवारी।
उज्जवल ललित ललाम श्याम अभिराम भाग लहि प्यारी।।
कीजिय कलित प्यार प्रानन से सहस भाँति बलिहारी।।
अंग अंग रस रंग तरंगनि उमगत छवि उजियारी।
'युगलअनन्यअली' वामा वर बिकि बिन मोल निहारी।।

पद -२८१

नवेले लाल की दुलही हो।।
निमिकुल कमल प्रभाकर स्वामिनि रघुकुल सुख उलही हो।
अवध ललन नव नेह ग्रन्थि की कलित कला खुलही हो।।
निज रुचि रूचिर प्रीति पालन लहि ललन ललकि भुली हो।
'कामदेन्द्र' सुकुमार लाड़िली मम शिर की कुलही हो।।

पद -२८२

बनि आये सुघर रघुराज बनरा मिथिला में।
शिर सोने के मौर विराजे जगमग ज्योति अपार अनुपम सेहरा में।।
श्याम वरन तन वसन सुरंग दुति उपमा छवि दरसात ज्यों घन चपला।
'शिवदयाल' सुरनर मुनि मोहैं देखि धरत नहिं धीर वर कोउ अबला में।।

पद -२८३

ललन पर टोना जनि कोउ डारो।

मिथिलापुर की नारि सबै मिलि आपन नैना सम्हारो।।
लावो री कोउ भाल दिठौना तरफत जियरा हमारो।
सिया मातु महरानी सुनैना राई लोन उतारो।।
राम लखन मन मोहिनी मूरति लक्ष्मीनिधि ते प्यारो।
'लालमणी' राघव बनरे पर तन मन धन सब वारो।।

पद -२८४

जाग्यो भाग तिहारो, राघोजी बनाजी।
जा दिन ते थे मुनि संग आये सुधरो सकल जु थारो।।
ऐसी दुलहिनि तुम कहाँ पाइहो ए तो जिय में बिचारो।
सूरजवंश उदै होइ आयो भाल कपाट उघारो।।
गिनते रहियो श्वांस सियाजू को मन जिन कीज्यो न्यारो।
'सियासखी' सियजू के व्याहत धोयो कुलरो कारो।।

पद -२८५

रंगीले बना दूती तेरी मुसुकान।
घर घर गवन कियो मिथिलापुर बातें करें लगि कान।।
निज वश करि सब नवल नागरी नेक लाज बिचवान।
'रसिकअली' सोऊ थकि रहिहैं नेह भयो अगवान।।

पद -२८६

आली री सिया को बनरा अजब रंगीलो।।
माथे मणि मौर सोहैं मोतिन के लर पोहैं,
लसत कपोल गोहैं कलँगी झुकीलो।।
लम्बे-लम्बे बार चिकनारे घुँघुरारे कारे,

कजरारी आँखे नासामणि चमकीलो।।
साँवरे वरन तन अति सुकुमारताई,
अंग अंग सुषमा की अनी अटकीलो।।
गुमराई गरुवाई गुणताई छाई दृग,
शीलता सनेहताई अति दरशीलो।।
भूली भूख प्यास गई लाजहूँ सकाई माई,
निश दिन मन रहैं छवि को छकीलो।।
मनहीं में प्रण कर तन अर्पण कीनों,
जानत सुजान चित हित अधिकीलो।।
'रसिकअली' गुरुजन जानी बात यह,
कहाँ लौं छिपाऊँ नेह नद उमगीलो।।

पद -२८७

जनि बांधो जंजीरे की पाग नजर कहीं लग जायगी।
एक तो पाग सुपेंच भरा है दूजे भौंह कमान।।
श्याम वदन पर जुलफें छोड़े तापर इतना गुमान।
'मधुरअली' मिथिले में रहिये कूचो मशाले की पान।।

पद -२८८

री सजनी कैसा बना बर बाँका।।
करि कतलान कियो पुरवासिन ऐसो है छैला मजा का
नैन पैन जनु वान मयन के मारत चोट अचाका।।
जनक शहर की खोरिन खोरिन घेरि लियो सब नाका।
'मधुरअली' कैसे घर जायब पड़त गलिन बिच डाका।।

पद -२८९

लाल के लाल तरवा अजब गजब करेला।
रात गई मैं जनक महल में राजकुँवर के नहछू करेला।
नख छीलन करि दियेऊँ महावर सो छवि सखि मोरा हिय गरेला।
अँगुरिन की छवि का बरनन करूँ लाल कमलदल दुति हरेला।।
दुई दिन में दुर्लभ सखि यह छवि अस मन गुनत नयन झरेला।
'रामानन्द' कठिन हाथन से कोमल चरण छुअत डरेला।।

पद -२९०

बनाजी प्यारी चितवनि है चितचोर।।
भौंह कमान बान बाँके लोचन कजरारे दृग कोर।
जुलुफै जुलुम करत मुख ऊपर अंग अंग भरी हैं मरोर।।
तुरंग नचावत आवत सजनी दशरथ राजकिशोर।
'सरयूसखी' बनरा की छवि पर वारिय काम करोर।।

पद -२९१

देखु सखी छवि राम बने की।
कंचन मौर खौर केशर शिर जगमग द्युति मणिमाल घने की।।
पग जावक कंकण कर राजत भूषण सकल सुदेश ठने की।
'बैजनाथ' कहि कौन सकै गति मृदु कटि पर पट पीत तने की।।

पद -२९२

श्यामसुन्दर रघुनाथ बने की छवि लखि मन न आघात री माई।
निरखत ललकि पलक नहिं लागत देह विवश होइ जात री माई।।
आठौयाम श्याम रङ्ग भीनी काम न कछू सोहात री माई।
'बैजनाथ' भूलीर सब सुधि बुधि दृग माधुरि पगि जात री माई।।

पद -२६३

आली सियावर कैसा सलोना।
कोटि मदन मूरति न्यौछावरि दै दै सखि चलि भाल दिठोना।।
मोर डरत जिय डगर नगर महँ कोऊ सखी करि देइ न टोना।
हौं तो जाइ ललकि गर लगिहौं रैहों न देइ जो मोहि भरि सोना।।
कहर पड़ी यह जनक शहर महँ छूट्यो खान पान निशि सोना।
'श्रीरघुराज' मौर वारे पर अब तो मोहि फकीरिन होना।।

पद-२६४

सखि लखन चलो नृप कुँवर भलो। मिथिलापति सदन सिया बनरो।।
शिर मौर वसन तन में पियरे। हठि हेरि हरत हमरो हियरो।।
उर सोहत मोतिन को गजरो। रतनारी अँखियन में कजरो।।
चित में चित चोरत सखि समरो। चितये बिनु जिय न जियै हमरो।।
अलकें अलि अजब लसैं चेहरो। झपि झूलि रह्यो कटि लौं सेहरो।।
युवती जन को जालिम जहरो। मन बैठत लखत मैन पहरो।।
पुनि ऐहैं नाहिं जनक शहरो। लेरी लोचन लाहु न करू गहरो।।
यक है वहि लखत बड़ो अनरो। पुनि रुकत न रोकेहु मन उनरो।।
चित चहत अरी लगि जाऊँ गरो। 'रघुराज' त्यागि जग को झगरो।।

पद -२६५

लखि आई सजनी बनरा सलोना बनि आयो री।।
मणिन जड़ित शिर मौर सुहायो, लखि छवि कोटि अनंग लजायो,
जामा जड़ित भरित मोतिन को, पीत रङ्ग मन भायो री।।

कठुला कण्ठ बिजायठ बाहन, कंकण लसत मणिन मनभावन,
श्याम छटा लखि खड़ी अटा पर, कंहत कविन सकुचायो री।।
भयो न है कोउ होनेव नाहीं, जनक भाग्य लखि अमर सिहाहीं,
'व्यंकटअली' चलीं सजि सब मिलि, सिया आजु वर पायो री।।

पद -२६६

राजकुँवरि छवि खानी, अनोखी बनी।
राजकुंवर बनरा सुखसागर विधि विरच्यो पहिचानी।।
मिथिलापुर नर नारि मगन मन जहँ तहँ कहत बखानी।
बड़भागिनि श्रीजनकदुलारी वर पायो मनमानी।।
जाहि महेश शेष निशि वासर आगम निगम बखानी।
'ज्ञानाअली' चेरी भई ताकी, त्यागि लोक कुल कानी।।

पद -२६७

छवीली प्यारी दुलही ललित किशोरी।।
जनु विरञ्चि श्रम करि त्रिभुवन में सुषमा सकल बटोरी।
सहित सभीत सुरुचि सिय विरची रामकुंवर की जोरी।।
जनु घन तड़ित कनक मरकतमणि पिय श्यामल सी गोरी।
निरखत रूप चराचर मोहत सह रति काम करोरी।।
उमा रमादि जासु पद सेवहिं सहित सुप्रीति न थोरी।
कहि न सकहिं सत शेष अंग छवि शारद मति भई भोरी।।
अति सप्रेम नर नारि पुलक तन जनु शशि ओर चकोरी।
तन मन 'मौन' निछावरि छवि पर हरष निरख तृन तोरी।।

पद -२६८

आली सियावर अजब रङ्गीलो।।

अंग अंग पर वार मदन मद मंजुलता छवि छैल छबीलो।
मुनि मन हरन बदन शशि मोहन राजकुँवर सुकुमार नवीलो।।
पङ्कज दृग चितवन चितचोरन मृदु विहँसन मन सहित ठगीलो।
लोल कपोल डुलन अलकन की कलित ललित वर फंद पगीलो।
तन घनश्याम सुभग अति सुन्दर रूप निधान गुमान छकीलो।
भूषण वसन विचित्र मनोहर सुभग सिंगार चार गरवीलो।।
हरष निरख नर नारि मगन मन उमगो प्रेम पीयूष रसीलो।
'मौन' मुदित मन मधुप निरन्तर लीनो चरण सरोज बसीलो।।

पद -२६६

नवल वनरा मन मेरो हर लीनो।।

भाल विशाल विशद वर भृकुटी, राजिव नयन ललित कजरा,
विलसत दुति झीनो।।
केशर खौर मौर मनि शोभित, कटि लग झूम झुको सेहरा,
मनसिज मद छीनो।।
घुंघुरारी अलकें अति प्यारी, जनु घनमाल वसत भँवरा,
रसिकन रस भीनो।
भूषण वसन सिंगार सुभग तन, मोतिनमाल लसत गजरा,
भृगुपद उर चीनो।।
मुनि मन सहज हरन चित चितवन, मृदु मुसक्याय हरो हियरा,
टोना कछु कीनो।।

छकन छको छवि निरख लगो मन, प्रेम पियूष पगो जियरा,
तन मन धन दीनो।।
रामकुमार बसो हिय सजनी, अति अनुराग उठत लहरा,
अमृत रस पीनो।
'मौन' मुदित कुल कान लाज सब, तृण सम तोर जगत झगरा,
सुख निधिमय जीनो।।

पद -३००

दुलहिया दूलह देखो दिलदार।
जनकलली यह फली भाग बस भली देवतरु डार।।
निमिकुल सिन्धु चन्द्रिका प्रगटी अवधि कियो उजियार।
'सुधामुखी' दूलह दृग पीवत छवि पियूष की धार।।

पद -३०१

आजु दुलहा बने हैं सिया के पिया।
माथे मौर केशरिया जामा जुल्फ जंजीर में फाँसे जिया।
धन्य भाग मिथिलेशलली को जिन निज भुज भरि भेंट लिया।
'दम्पतिअली' इन युगल रूप पै तन मन धन सब वारि दिया।।

पद -३०२

क्या छवि धारी सियाजू को बनरा।।
जगमग जगमग मौर विराजे और अनुपम मोतिन सेहरा।
पीत बसन श्यामल अंग शोभित और मनोहर फूलन गजरा।।
पान खात मुसुकात मधुर मृदु सैन चलावै नैन दिये कजरा।
'गोपअली' बिनु मोल बीकि गई परत अचानक वारत नजरा।।

पद -३०३

सखि यह अवध छयल दिलदार बना बनि आयो री।
मोतिन मौर शीश पर सोहैं जुवतिन को मन छिन में मोहै,
को है यहि जग बीच जो नाहीं लुभायो री।।
मिथिला की बाँकी सुकुमारी जेती रूप गुमानन वारी,
निज गुमान छवि पिय की निरखि गँवायो री।।
'मोहनि' पढ़ि टोना हँसि डारत तापर तिरछी सैन निहारत,
डगर-डगर यहि पुर में कहर मचायो री।।

पद-३०४

बनरा बना क्या बांका, सोहत शिर मौर
दीन्हें नयन बिच कजरो, वसन तन पियरो, लेत ठगि ज़ियरो,
केशर की खौर।।
घूमें अलिन मिथिला की प्रेम में छाकी, छबी पै ललाकी,
सब ठौरहिं ठौर।
होवैं सियापति रामा,'मोहनि' सुखधामा, कहैं सब वामा,
पूजें गण गौर।।

पद -३०५

बनी छवि स्वामिनी सियजू की।।
कोटिन रवि शशि द्युति पर लाजत सब उपमा भइ फीकी।
व्याह सिंगार सजति अंग अंगनि लोनी मनहरनी की।।
धन धन भाग अवध बनरा तेरो पायो दुलहिनि नीकी।
सदा सुखी रहो दुलहिनि दुलहा जीवनि 'सियाअली' की।।

पद ३०६

दुलहिया लाड़िली अलबेली।।
अति सुन्दर सुकुमारि सलोनी ब्याह शृंगार सजेली।
राजति दूलह संग मण्डपतर कोटिन चन्द्र उजेली।।
जैसहिं नवल बना मनभावन तैसेहिं प्यारी नवेली।
'सियाअली' लखि लखि न्योछावरि वारति प्राण सहेली।।

पद -३०७

बनी मेरी लाडिली बनरी रे।
अंग अंग सोहति लोनी छवि त्रिभुवन की सुन्दरी रे।
भूषण विविध सहानी चूड़ी शोभित शुभ चुन्दरी रे।
'सियाअली' बनरा चित चोरति कर कंकन मुन्दरी रे।।

पद -३०८

मजेदार क्या बनरा बनि आया।।
माथे मौर केशरिया जामा क्या सेहरा छवि छाया।
भौंह कमान नयन रतनारे क्या कजरा मन भाया।।
मिथिलापुर की चतुरि नारि कहैं क्या रानी सुत जाया।
'सियाअली' मेहदी कर दीन्हें क्या लाली दरसाया।।

पद -३०९

मतवारे बना की नजर कैसी।।
जब से तूँ मिथिला में आये शहर में कहर मची ऐसी।
नोकदार जहरीले नैना युवतिन पै चोट करैं ऐसी।।
केती मनहीं मन घायल भई केतीं ठाढ़ी जकी जैसी।
'सियाअली' मिलनो अब चहती सिन्धु में जाय नदी जैसी।।

पद -३१०

जिया सिय दुलहे पै बिकाय गई रे।
माथे मौर खौर केशर की जुलफन में अरुझाय गई रे।
मन्द मन्द मुसुक्यान माधुरी हँसि हेरनि में हेराय गई रे।।
अंग अंग की छटा माधुरी पीत बसन फहराय गई रे।
'सियाअली' इन मृदु मूरति पै सब कुलकानि गँवाय गई रे।

पद -३११

सिया के दुलहा मोह्यो मोह्यो जियरवा।
शिर पर मौर जुलफ घुंघुरारी बड़ी बड़ी अँखियन में सोहे कजरवा
अधर बुलाक श्रवन बिच कुण्डल गर बिच सोहे सुमन की गजरवा।।
अंग-अंग पर छाई माधुरी तापै फहरत वसन पियरवा।
'सियाअली' तन मन धन बारी अब जनि होहु दृगन ते निपरवा।।

पद -३१२

सुन्दरी सलोनी प्यारी मिथिला दुलारी हे किशोरी मोरी,
कोटिन चन्दा की इजोर।।
उमा रमा ब्रह्माणी समता न पावै हे कि., लाजत रतिहूँ करोर।।
मन्दहँसनियाँ मुख अतिहीं सुहावै हे कि., चितवनि अमी रसबोर।।
सुनि सुघराई अयला अवध के छैला हे कि.,
पाये तोहि शंभु धनुतोर।।
हेरि हेरि मुख पिया पलको न पारे हे कि.,
बनि मुख चन्दा के चकोर।।
'सियाअली' लखि लखि हिया हुलसावै हे कि.,
बाढ़हु सोहाग सुखतोर।।

पद -३१३

दुलहिन किशोरी मोरी रूप की रंगीली हाय रे दुलहिन,

दुलहा निहारै छवि तोर।।

छिनहूँ अलग नहीं होत है पलक, हा.,तोरे मुखचन्दा के चकोर।।

निजकर भूषण औ बसन सम्हारैं हा., छवि निरखत भै विभोर।।

सियाअली दुलही पग रचत महावर हा., दुलहा बन्हौलनि प्रेम डोर।।

पद -३१४

जेहने सलोनी सिया तेहने सलोना यो दुलरुवा दुलहा,

कनि हँसि हेरू हमरी ओर।।

अपने दुलरूवा शिर मौरिया सँवारब यो दु.,

मोतिया लगायब चहुँओर।।

जुलुफ अतरवा भाल केशर की खौरवा यो दु.,

कजरा लगायब दृग कोर।।

धनि धनि प्यारी मोरी धन मनमोहना यो दु.,

मड़वा वैसायब गाँठि जोर।।

मुख चुमि चूमि दुलहा लेइबे बलैया यो दु.,

कनि बोली बोलू रस बोर।।

दोनों दुलरुवा के हिय में बसायब यो दु.,

'सियाअली' सरबस मोर।।

पद -३१५

छवि जादू भरी सिया प्यारे की।

रूप लखत दृग प्राण लुभाने सुधि बिसरे गृह द्वारे की।।

साँवरिया के ओर निहारे रस फीको लगत जग सारे की।
जुल्फी अलकें बने कपोल पै अति नीको मदन छवि वारे की।।
नेह निगाह भरी चितवन से प्राण हरण बलिहारे की।
मूक हृदय की को पहिचानै विनु सर्वस प्राण अधारे की।।
जावक रंजित सुभग चरणतल दिल दिवाने भये अरुणारे की।
'श्रीरामाजी' के जीवन सर्वस नित दुल्लह सुकुमारे की।।

पद -३१६

बाँका बनरा ने मन को लुभाया अली।
माथे मौर खौर केशर की तिलक रेख अति भाया अली।।
अलकावलि अतरन सों भीगी उरझि कपोलन आया अली।
मन्द हँसनि नाशामणि अधरनि नयन मयन मद छाया अली।।
व्याह विभूषण वसन विभूषित मनमथ कोटि लजाया अली।
पगतल रचित महावर सौरभ मुनि मन मधुप चुराया अली।।
भाग सुहाग अनुराग सिया के सोइ दूलह बनि आया अली।
'योगेश्वर' हिय मान हटाकर रूप छटा छहराया अली।।

पद -३१७

मैया सुनयना के पाहुन रे कोई नजरो न लागे।
प्रेमिन जीवन धन रे कोई नजरो न लागे।।
कवन सुकृत हम परसल पायल कौशल्या के चारु खेलौना रे।
वाम नयन भुज फरकन लागे पायऊँ छवीले नृप छौना रे।।
छेमकरी नित मड़रत आँगन देखलौं मैं श्याम सलोना रे।
'मोद' न भूलि लड़यौ नैना चितवन में जादू टोना रे।।

पद -३१८

कैसा बना अलवेला लखो री सखी।।
शिर मणि मौर कलंगी झुकेला छोरन छवि छहरेला,
जुलुफ सिटेला भृकुटी मटकेला चितवनि चखनि चुभेला।।
केशर खौर भाल झलकेला अलक कलित झुलकेला,
नासामागे मंजुल हुलकेला लखितहिं मन ललकेला।।
अधर मृदुल मुसुकनि मधुरेला मिथिला सिथिल करेला,
सियाजू के नाते पाहुन भेला 'मोद' सु मगन नचेला।।

पद -३१६

देखियौन-२ ए बहिना, हरियो हरिअर भेला होइते वैदेही दहिना।
जिनकर सुषमा शेष शारदा कल्पहुँ लौं कहि ना।
पार पवै छथि से सिय सन्मुख जुगुनु ज्योति जहिना।।
पिय प्यारे निवसै छथि पलहूँ प्यारी बिनु रहिना।
पिय मुखचन्द चकोरी भोरी सिय गोरी तहिना।।
परम भाग्य सँ भेल समागम होइत रहौ यहिना।
धन मिथिला धन 'मोद' मैथिली धन हम सबही ना।।

पद -३२०

नव दुलहिनि वर झाँकी सखि झाँकुत झमकि कै ।।
उमड़ैत छैन्ह आनन्द अंग अंग सँ उमकि कै ।।
सिन्दूर मौरि हिनकर केशर सुमौर हुनकर,
चकचौंधि लगादइऐ, चख चमाचम चमकिकै ।।

झुकि वीर झुमक अइदिसि, कुण्डल ओ अलक ओइ दिसि,
दाहिनहुँ दवादइए द्युति दमादम दमकि कै ।।
अंजित सुनयन सियके, काजरहूँ कयल पिया के,
दरस कंगन दृग गड़इऐ, अति रमा रम रमकि कै ।।
मुसुकैत मुख छवीलिक, विहँसैत वदन छैलक,
छकि 'मोद' मग्न होइऐ, छवि छमाछम छमकि कै ।।

पद -३२१

सिय दुलहे से नयन जब जूटी।।
लोक लाज कुल की मर्यादा ताग तड़ातर टूटी ।।
काल कर्म भ्रम प्रबल कालिमा छवि छाकतही छूटी ।।
निज निज रुचि अनुरूप महा सुख लूटैं चतुर बधूटी ।।
'मोदअली' के प्राण जीवन धन श्याम सजीवन बूटी ।।

पद -३२२

मोहि लेलक सजनी मोरा मनमाँ, पहुनमाँ राघो।।
जुलुमी जुलुफिया कारी, माथे मणि मौरिया न्यारी,
लाल लाल भाल पर चननमाँ ।।
अँखियाँ में काजर काली, ठोरवा पर पानक लाली,
मुसुकैत श्यामल बदनमाँ ।।
दुपटा चपकन लगनौती, पहिरे वियहुती धोती,
पहुँची पर आम के कंगनमाँ ।।
धनि धनि किशोरी मोरी, देखल 'सनेहिया' जोरी,
हिय मोरा कोहवर के भवनमाँ ।।

पद -३२३

मोहनी मुरतिया देखि मोहे मोरा मनमां हे मनमोहन दुलहा,
पल भर ना बिसरल जाय ।।
एक मन भावे मोरा तोरे संगे रहितहुँ हे,
मुख छवि देखितहुँ अघाय ।।
तोहरो स्वरूप देखि सुधि बुधि भूले हे,
रति पति सतत सिहाय ।।
सिया के सोहाग विधि अचल बनावथि हे,
मुँह देखि जियरा जुड़ाय ।।
कहथि 'सनेहलता' मन के मनोरथ हे,
बसु मोरा नयना में सदाय।।

पद -३२४

नयनमाँ माने नहीं, मोरा लालन कनेक मुसुका दे।।
सुन्दर लाल भाल पर चानन, काजर कयल नयन छवि आनन,
मौरिया के लड़ हटवा दे ।।
दाड़िम दसन हँसन बिच टोना, त्रिभुवन मोहन श्याम सलोना,
मुसुकैत नैना उठा दे ।।
हीरक हार मउर लर मोती, चपकन चारु बियहुती धोती,
चरणक महावर दिखा दे ।।
'स्नेहलता' लखि रूप मनोहर, राखि लेल हिय बीच धरोहर,
माँगब न हम किछु जादे ।।

पद -३२५

क्या खूब बनी है झाँकी मनमोहन राम सिया की।
दोउ बैठे रतन सिंहासन, शोभे करकंज शरासन,
ये सरबस जनक धिया की।।
ये युगल स्वरूप मनोहर, शिवजी के अचल धरोहर,
यह सम्पति हम दुखिया की ।।
लखि श्याम गौर की जोड़ी, भई रतिपति की मति भोरी,
क्या कहौं छटा छवि बाँकी ।।
लखि रूप अनूप सुहावन, भई 'स्नेह' सखी अति पावन,
मिल गये रतन अँखियाँ की ।।

पद -३२६

मोरा अखियाँ पलक जनि मूनू पिया प्रीतम रहता।
पुतली के भीतर मन्दिर मनोहर, राखू छिपा दूनू असली धरोहर,
गलबहियाँ देने तई में दूनू ।।
श्यामल पुतलिया में श्यामल समैता, गोरी सिया के हृदय बसैता,
चितवनियाँ बचन सूनू सूनू ।।
नैना तिरंगी के तीनू सुमन से, पूजब चरण पिया प्यारी के मन से,
दिन रतिया सुमन चूनू चूनू ।।
आँसू 'सनेहक' सलिल कमला के, धोयब चरण थिक जनम
मिथिला के, पैजनियाँ सुनब रूनू झूनू।।

पद -३२७

जादू भरे नयन तोरे जादू भरे नयन, ओ हमारे मोहना जुलुम तोरे नयन।।

माथे मणि मौरिया जुलुफ कारी कारी, श्यामल ललाट पर तिलक उजियारी, लागे जेना चन्द्रमा के तरे तरे रैन।।
भृकुटी कंटीली गुलाब केर डारी, काते काते अँखियाँ कयल कजरारी, लागे जेना भौंरा पसारे दुनु डैन।।
साजन मधुर मुसुकान छबि न्यारी, जनम जनम मन होइया जे निहारी, 'लतिका सनेह' क न पावे जिया चैन।।

पद -३२८

श्यामला पहुनमां बिनु निदियो न आवे सुनु, हे सजनी,
मनमाँ चोरौने नेने जाय।।
नीको नहिं लागे मोरा दिन अरु रतिया सुनु,
दु अरो अंगनमां न सोहाय।।
सियाजू के पावि मोरा भेल दरशनमां सुनु,
भेलथिन बिधाता बड़ सहाय।।
'लतिका सनेह' गावे किछियो न भावे सुनु.,
मिथिला से दिय जनि जाय।।

पद -३२९

सिया के सजनमां सङ्ग दिवस गमायब हे मन मोहलक,
मोहना, हुनका बिनु किछियो न सोहाय।।
जुलमी नयनमां शर बेधलक करेजवा हे,
टोनमां लगौलनि मृदु मुसुकाय।।
नान्हीं नान्हीं लाल लाल कर कमलमां हे,
अंगुरी छुवैतहि लेल फुसलाय।।

आव त 'सनेहिया' बिनु हुनको न बनतैन्ह हे,
मिथिला में खुद गेला बिकाय।।

पद -३३०

हिया बसु जिया बसु श्यामला पहुनमां राम,
हिया बसि गेल, तोरे मन्द मुसुकनमां राम।।
कारी घुंघुरारी केश मौरिया सोहनमां राम हि.,
तोरे भाल के चननमां राम।।
काजर कयल आँखि लाल मुख पनमां राम हि.,
तोरे चोखे चितवनमां राम।।
पियरी बियहुती धोती पीत चपकनमां राम हि.,
तोरे आम के कंगनमां राम ।।
सियाजी कुमुदनी संग नील कमलनमां राम हि.,
सखि 'सनेह' के जीवनमां राम।।

पद -३३१

श्री राघव लला छथि सहाय तखन परवाहे की।।
हम सब छी मिथिला के बासी मिथिला के ओ छथि जमाय।
बहिनी हमर छथि रघुकुल पतोहू जिनका सँ दुनियाँ जुड़ाय।।
विश्व फाँस जिनका करतल में मिथिला में गेला बन्हाय।
'स्नेहलता' निर्भय रहु हरदम दुलहा के पग लपटाय।।

पद -३३२

झमकि झहरि छबि रस बरसे, अनमोल दुलहवा।

श्याम घटा छबि छटा छहरि रही, लखि प्रेमिन मनमोर हरसे।।
जनम जनम के सूखल जियरा, छवि रस बस रस रस सरसे।
छबि माधुरि रस सरस बरसि रहे तइयो प्रेमीगन पियास तरसे।।
ई छबि लखि सखि सब जग छूटल, चलि भइ अब पहु प्रेम डगरसे।
सतत 'करील' सजनि लागी रहे, लगन की डोरी सियावर से।।

पद -३३३

अवध से अइले सुन्दर दुलहा हे सखिया जियरा जुड़ा लऽ ।
माथे मणि मौरिया सोहे कान में कुण्डलवा,
अँखियाँ में सोहेला कजरवा।।
भाल पर चानन सोहे मुख पान बिरिया,
अमीरस चुएला अधरवा।
पियरी बियहुती धोती जामा जड़तरिया,
पहुँची पर आम के कंगनमां।।
जेहने किशोरी मोरी विधना मिलौलनि जोड़ी,
आजु भेल सुफल जीवनमां।
कहत सनेह भरी पाहुन से हाथ धरि,
मिथिले में रहियौ सब दिनमां ।।

पद -३३४

इन दुलहन के जुलफन पर बलि बलि जाओ री।।
कच श्याम श्याम घुंघुराले, शिर मौर मुकुट वर धारे,
लखु कमल नयन में काजर, दृगन जुराओ री।।
लखु लाल बियहुती चानन, मकराकृत कुण्डल कानन,

मुख छबि जनु विमल सुधाकर, प्यार बुझाओ री।।
कटि पीत पीताम्बर सोहैं, कर कंगन त्रिभुवन मोहैं,
सखि ! मन मोहन कत सुन्दर, हृदय बसाओ री।।
पग पायल की छबि न्यारी, कहैं 'स्नेहलता' बलिहारी,
पग नख की लाल महावर, जनि बिसराओ री।।

पद -३३५

बलिहार भेला बगिए में पहुना, हमरा लली जू के निहारि हे।
शशिमुख चख के चकोर बनौलनि,चखलनि दृग पट टारि हे।।
निरखि निरखि छबि अतिसुख पौलनि,सुधि बुधि देलनि बिसारि हे।
कोमल स्वभाव गुनि हिया हुलसौलनि,सील सनेह बिचारि हे।।
नयन पलक तर छबि के छिपौलनि, झरलनि नेहक वारि हे।।
हिय पट प्रेमक रंग बनौलनि, चित्रित कैलनि सम्हारि हे।।
रघुवंशिन्ह के गर्व गमौलनि, विरद के देलनि बिगारि हे।
'पद्मलता' गुरुवर सँ डेरैलनि, सब छल देलनि उघारि हे।।

पद -३३६

कनेक हँसि हेरू दुलह सरकार, दुलह सरकार यो पाहुनजी हमार।
रूप अनूप मदन मन मोहन, जुलुम करैया बियहुती श्रृंगार।
काम कमान भृकुटी हिया बेधय, तिरछी तकनि ओ नयन कोरदार।।
घायल मिथिलानिक अछि औषधि, दसनक दमक अधर अरुणार।
'पटरानी' छबि लखि हिय हुलसय, फीका लगैया सकल संसार।।
'पटरानी' छबि लखि हिय हुलसय, फीका लगैया सकल संसार।।

पद-३३७

गजब करे राम तोरी मन्द मुसुकनियाँ।।

शिर पर मौर मणिनमय राजत, भाल तिलक झलकनियाँ।
नैन बान सुरमीले नुकीले, चढ़ि दोनों भौहें कमनियाँ।।
गोल कपोल चिबुक अति सुन्दर नाशामणि लटकनियाँ।
अरुण अधर सुन्दर मृदु बोलनि, दशनन की दमकनियाँ।।

पद -३३८

पिया प्रीतम के रूप छबि छकिते रहै छथि किशोरी,
जेना चन्दा के निरखे चकोरी।।
छबि नेह भरल दोउ नैना, नहिं तृप्ति पावथि दिन रैना,
मन भरने उमंग सिया गोरी।।
पिया मुख छबि हिय सुख दैना, पलहूँ दृग विलग रहे ना,
गलबहियाँ देने दुनू जोरी।।
छबि छकत परस्पर नैना, मनसिज रति धीर रहै ना,
देखि अलिगन भेली मति भोरी।।
उपमा जग तूलि सकै ना, दम्पति सुख कहत बनै ना,
'पद्मलतिका' युगल रस बोरी।।

पद -३३९

सखि कौशल किशोर भेला मन में विभोर बलिहारी,
प्राण प्यारी के सूरति निहारी।।
जे सकल भुवन के मोहै छथि, जे रसिकन हिय में सोहै छथि,
रूप लखिते चकित भेला भारी।।
छबि छकिते यदपि रहै छथि, तैयो नहिं तृप्ति पवै छथि,
भेला विवस विश्व बस कारी।।

गण शील सुमिरि हुलसै छथि, छवि प्रभा देखि पुलकै छथि,
जे कहवैत छथि रूप धारी।।
पल भरि नहिं विलग रहै छथि, तन मन न्यौछार करै छथि,
'पद्मलतिका' के प्रीतम बिहारी।।

पद -३४०

सखि देखु रसिक दुलहा के मधुर मुसुकावै छथि।
केशर खौर अँजाओल नयना, अरुण अधर बिहँसा के,
सुधा बरसावै छथि ।।
गोल कपोल जुलुफ झुकि झूलत, बुलकन डुलकि डोला के
जिया तरसावै छथि।
मणिमुक्ता सिर मौर सुशोभित, कुण्डल मकरिया सजा के
दमक दमकावै छथि।।
संग प्रिया सुकुमारी सलोनी, अद्भुत छवि दरसा के
झाँकी झमकावै छथि।
'पद्मलता' बलिहारी रसिकवर, पावि श्रीलाड़िली सिया के
हिया हुलसावै छथि.।।

पद -३४१

अजब लागे झाँकी युगल रसिया के।
श्यामली सूरत सुछबि सुहावनि, गोरी बदन मोरी स्वामिनि सिया के।।
चन्द्र चन्द्रिका वर दुलहिन छवि, जगमग मण्डप होत हिया के।
लहँगा लाल जड़ित मणि आँचर,पीताम्बर कटि सोहत पिया के।।

इत मौरी उत मौर सुहावन, चन्द्रहार उर माल मोतिया के ।
अरुण अधर नासामणि हलरत, नकवेसर हलरात प्रिया के।।
मकराकृत कुण्डलदुति दमकत, झुमका झमकत जनकधिया के।
घनदामिनि दुति मन्द करत सखि, छवि प्रीतम 'पटरानी' सिया के।।

पद -३४२

तन मन धन न्योछारलौं यो पाहुन मन्द हँसन पर।।
मन्द हँसन आहाँक दाड़िम दसन पर,पान चभत अरुणारी,
अधर रस सुधा बरिसन पर।।
श्यामल वदन भाल केशर चन्दन पर, कमल नयन कजरारी,
फँसन मन तिरछी तकन पर।।
चौतनी पीत मणिन चमकन पर, जुलुफक लट घुंघुरारी,
इतर सिंचन गमकन पर।।
गोल कपोल कुण्डलक हलन पर, नाशामणि उजियारी,
अधर ऊपर हलरन पर।।
पीताम्बर जड़ि सुकटि कसन पर, चादर जड़ित किनारी,
चटकदारी चपकन पर।।
कोटि काम रति रूप लतन पर, दुलहिन सिया 'पटरानी'
दुलह गर भुज लपटन पर।।

पद -३४३

सिया दुलहा केहन अनमोल बहिना,
देखि मनमां विकल बिना मोल।।
शशि मुख घेरने जुलुफ घन कारी, चिक्कन चपल चमक घुंघुरारी,

तापै मौरिया के छोर डमाडोल बहिना।।
तिलक ललाट पटल झलकारी, पर शिर पेंच रतन की धारी,
चुमे कुण्डल कपोल गोल गोल बहिना।।
कज्जल कलित नयन रतनारे, नाशामोती जोति शुक तारे,
अरुणाधर अमिय मधु बोल बहिना।।
भाग्य सँ भेला सिया 'पटरानी', विपिन प्रमोद अवध रजधानी,
कतौं सुनलौं न एहन मेल जोल बहिना।।

पद –३४४

कवन सकृत फल मिथिला जनम भेल, सियाजू बहिन भेली मोर,
हे सखी पाहुन नवल चितचोर।।
जेहने किशोरी सकल गुण आगरि, तेहने श्रीअवध किशोर।।
अपना पाहुनजी के चन्दन लगायेब, अञ्जन आंजब दृग कोर।।
अपना पाहुन जी के पान लगायेब, मुसुकन पर होयबै बिभोर।।
मौरक शोभा नयन भरि निरखब, लट लटकल चहुँओर।।
रतन मण्डप पर प्यारी लली संग, भाँवरि घुमायब गाँठ जोर।।
अपना पाहुंनजी के कोहवर बैसायब, गारी सुनैवे रस बोर।।
'पद्मलता' अभिलाष न दोसर, एतबे मनोरथ मोर।।

पद –३४५

दुलह सरकार जी के, देखु झाँकी केहन मजेदार।
जुलुमी जुलुफ माथे मणि मौरिया, चमके चन्दनमां लिलार।।
श्रवण कुण्डल मुख छबि मनहरिया, राजिव नयन कजरार।
गले मणि माल कटि सोहत पीताम्बर, चादर अजब कोरेदार।।